CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2008 with Solution PDF-Set 2/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 99

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1, 4, 6, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जब कभी मछेरे को फेंका हुआ
फैला जाल
समेटते हुए, देखता हूँ
तो अपना सिमटता हुआ
'स्व' याद हो आता है —
जो कभी समाज, गाँव और
परिवार के वृहत्तर रकबे में
समाहित था
'सर्व' की परिभाषा बनकर
और अब केन्द्रित हो
गया हूँ, मात्र बिन्दु में ।
जब कभी अनेक फूलों पर
बैठी, पराग को समेटती
मधुमक्खियों को देखता हूँ
तो मुझे अपने पूर्वजों की
याद हो आती है,
जो कभी फूलों को रंग, जाति, वर्ग
अथवा कबीलों में नहीं बाँटते थे
और समझते रहे थे कि
देश एक बाग है,
और मधु-मनुष्यता
जिससे जीने की अपेक्षा होती है ।
किन्तु अब
बाग और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है
मात्र संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ । [10 अंक]

1(क). कविता में प्रयुक्त 'स्व' शब्द से कवि का क्या अभिप्राय है ? उसकी जाल से तुलना क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक का अर्थ कविता के प्रसंग से स्पष्ट होता है। यहाँ स्व व्यक्ति के अपनेपन और आत्मबोध का सूचक है।
- फैले जाल का सिमटना और व्यापक आत्मीयता का निजी सीमा में बँधना तुलना का आधार है।

चरण 1: स्व का प्रसंग समझें कवि का स्व केवल उसका शरीर या नाम नहीं, उसका आत्मबोध तथा अपनेपन का संसार है। पहले वह समाज, गाँव और परिवार के व्यापक क्षेत्र में समाहित था। सर्व की परिभाषा बनने का अर्थ है कि कवि दूसरों को भी अपने अस्तित्व और हित का अंग मानता था। इस प्रकार स्व में सामूहिकता और आत्मीय संबंधों का भाव था।

चरण 2: जाल से समानता पहचानें मछुआरा जब फैले हुए जाल को समेटता है, तो उसका विस्तार घट जाता है। इसी दृश्य को देखकर कवि अपने स्व के सिमटने को पहचानता है। जो आत्मीयता पहले पूरे समाज तक फैली थी, वह अब केवल निजी अस्तित्व में केंद्रित हो गई है। मात्र बिंदु बन जाने का कथन इसी संकुचन को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष स्व से कवि का अभिप्राय अपने आत्मबोध और अपनत्व से है। उसकी जाल से तुलना इसलिए हुई है कि फैले जाल के

समान उसका व्यापक सामाजिक अपनत्व भी सिमटकर केवल अपने तक सीमित हो गया है।

त्वरित सुझाव: स्व का अर्थ लिखते समय सर्व और बिंदु का अंतर देखें; जाल के सिमटने को अपनत्व के संकुचन से जोड़ें।

1(ख). कवि का 'स्व' पहले कैसा था और अब कैसा हो गया है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में पहले और अब का विरोध सामाजिक आत्मीयता के बदलते स्वरूप को व्यक्त करता है।
- सर्व और बिंदु क्रमशः व्यापक सामूहिक चेतना तथा संकुचित व्यक्तिगत चेतना के प्रतीक हैं।

चरण 1: पहले के व्यापक स्व को समझें पहले कवि का स्व समाज, गाँव और परिवार के वृहत्तर क्षेत्र में समाहित था। वह स्वयं को सबसे जुड़ा हुआ अनुभव करता था और उसका अपनापन केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं था। सर्व की परिभाषा बनने का कथन बताता है कि उसकी चेतना में दूसरों के सुख-दुःख और सामूहिक जीवन के लिए भी स्थान था।

चरण 2: अब की स्थिति और उसका कारण जोड़ें अब वही स्व मात्र बिंदु में केंद्रित हो गया है, अर्थात कवि की चेतना अपने व्यक्तिगत दायरे तक सिमट गई है। व्यापक सामाजिक जुड़ाव की जगह निजी हित और व्यक्तिकेंद्रित दृष्टि ने ले ली है। कविता का आगे का अंश भी मनुष्यता के जीवंत व्यवहार से हटकर जड़ स्मृति बन जाने की बात कहता है; इससे सामूहिक अपनत्व के क्षय का भाव स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष पहले कवि का स्व व्यापक, सामाजिक और सबको अपने में समाहित करने वाला था। अब वह व्यक्तिकेंद्रित और संकुचित हो गया है, क्योंकि सामूहिक अपनत्व घटकर निजी हित तक सीमित रह गया है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में पहले की स्थिति, अब की स्थिति और संकुचन का कारण, इन तीनों बातों को अलग-अलग स्पष्ट करें।

1(ग). कवि को अपने पूर्वजों की याद कब और क्यों आती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-बोध में कब का उत्तर दृश्य से और क्यों का उत्तर उस दृश्य से जुड़े मूल्य से मिलता है।
- अनेक फूलों से पराग लेना बिना भेदभाव सबके साथ संबंध बनाने की समानता प्रस्तुत करता है।

चरण 1: स्मरण कराने वाला दृश्य पहचानें कवि जब अनेक फूलों पर बैठकर पराग समेटती हुई मधुमक्खियों को देखता है, तब उसे अपने पूर्वज याद आते हैं। प्रश्न का समय-संबंधी उत्तर यही विशेष दृश्य है। फूलों की विविधता के बीच मधुमक्खियों की एक जैसी सक्रियता कवि को मनुष्यों के बीच अपनत्व की भावना का स्मरण कराती है।

चरण 2: पूर्वजों से दृश्य का संबंध समझें पूर्वज फूलों को रंग, जाति, वर्ग अथवा कबीलों में नहीं बाँटते थे। फूलों के माध्यम से कविता विभिन्न मनुष्यों और समुदायों की ओर संकेत करती है। जैसे मधुमक्खियाँ अनेक फूलों से पराग लेकर मधु बनाती हैं, वैसे ही पूर्वज विविधता के बीच मनुष्यता को महत्त्व देते थे। वे देश को बाग और मनुष्यता को जीवनोपयोगी मधु समझते थे।

चरण 3: निष्कर्ष अनेक फूलों से पराग समेटती मधुमक्खियों को देखकर कवि को पूर्वज याद आते हैं, क्योंकि वे भी रंग, जाति, वर्ग और कबीले का भेद किए बिना सभी में समान मनुष्यता देखते थे।

त्वरित सुझाव: उत्तर की शुरुआत मधुमक्खियों वाले दृश्य से करें और फिर भेदभावरहित पूर्वजों से उसकी समानता बताएँ।

1(घ). उसके पूर्वजों की विचारधारा पर टिप्पणी लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारधारा पर टिप्पणी में कविता में व्यक्त मान्यताओं और उनके मानवीय अर्थ को स्पष्ट किया जाता है।
- देश का बाग और मनुष्यता का मधु होना विविधता में एकता तथा जीवनदायी मानवता के प्रतीक हैं।

चरण 1: भेदभाव का निषेध पहचानें कवि के पूर्वज रंग, जाति, वर्ग अथवा कबीले के आधार पर भेद नहीं करते थे। फूलों को इन श्रेणियों में न बाँटने की बात वास्तव में मनुष्यों को ऊँच-नीच और समूहगत भेदों से न देखने की भावना व्यक्त करती है। उनकी दृष्टि उदार और समावेशी थी; विभिन्न व्यक्तियों और समुदायों के प्रति उनका व्यवहार अपनत्व का था।

चरण 2: बाग और मधु की मान्यता समझें वे देश को एक बाग मानते थे, जिसमें विविधता के होते हुए भी सब एक व्यापक समुदाय के अंग हैं। उनके लिए मधु मनुष्यता थी, जिससे जीवन की अपेक्षा पूरी होती है। इसका अर्थ है कि मानवीय संबंध, पारस्परिक सद्भाव और समानता जीवन को सार्थक बनाते हैं। पूर्वजों की विचारधारा इन्हीं मूल्यों को व्यवहार में महत्त्व देती थी।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के पूर्वजों की विचारधारा उदार, समतावादी और मानवतावादी थी। वे भेदभाव नहीं करते थे तथा देश की विविधता में एकता और मनुष्यता को जीवन का आधार मानते थे।

त्वरित सुझाव: टिप्पणी को केवल उदार शब्द तक न रोकें; रंग-जाति का भेद न करना तथा देश-बाग और मधु-मनुष्यता के प्रतीक जोड़ें।

1(ङ). निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :

“और मनुष्यता
शिलालेखों में जकड़ गई है ।” [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करने के लिए शाब्दिक दृश्य से आगे बढ़कर उसके सामाजिक संकेत को समझना आवश्यक है।
- शिलालेख और संग्रहालय की जड़ वस्तुएँ मूल्यों के निष्क्रिय स्मारक बन जाने का संकेत देती हैं।

चरण 1: प्रतीक का अर्थ स्पष्ट करें शिलालेखों में जकड़ने का आशय मनुष्यता का केवल लिखित वचनों, स्मृतियों और अतीत की प्रशंसा तक सीमित रह जाना है। कवि किसी मनुष्य के सचमुच पत्थर में कैद होने की बात नहीं कह रहा है। वह इस विडंबना को सामने लाता है कि जिन मानवीय मूल्यों को जीवित व्यवहार में होना चाहिए, वे केवल स्मारकों में सुरक्षित दिखाई देते हैं।

चरण 2: कविता के पूर्व प्रसंग से जोड़ें पूर्वजों के लिए मनुष्यता जीवनदायी मधु थी और देश विविध फूलों वाला बाग। अब वही भावना संग्रहालय की जड़ वस्तु जैसी रह गई है। इससे संकेत मिलता है कि परस्पर प्रेम, समानता और भेदभावरहित अपनत्व का दैनिक आचरण में क्षय हो गया है। मानवीय आदर्शों का सम्मान कथनों में होता है, पर वे लोगों के संबंधों को पहले की तरह दिशा नहीं देते।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का आशय है कि मनुष्यता के आदर्श जीवन के सक्रिय आचरण से हटकर केवल शिलालेखों और स्मारकों की निष्क्रिय बातें बन गए हैं। कवि मानवीय संवेदना और अपनत्व के क्षय पर व्यथा व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: शिलालेख को पत्थर तक सीमित न समझें; लिखे हुए आदर्श और उनके दैनिक व्यवहार में अभाव के अंतर को स्पष्ट करें।

अथवा

1. तू हिमालय नहीं, तू न गंगा-यमुना
तू त्रिवेणी नहीं, तू न रामेश्वरम्
तू महाशील की है अमर कल्पना
देश ! मेरे लिए तू परम वंदना ।
मेघ करते नमन, सिंधु होता चरण,
लहलहाते सहस्रों यहाँ खेत-वन ।
नर्मदा-ताप्ती, सिंधु, गोदावरी,
हैं कराती युगों से तुझे आचमन ।
तू पुरातन बहुत, तू नए से नया
तू महाशील की है अमर कल्पना ।
देश ! मेरे लिए तू महा अर्चना ।
शक्ति-बल का समर्थक रहा सर्वदा,
तू परम तत्त्व का नित विचारक रहा ।
शांति-संदेश देता रहा विश्व को ।
प्रेम-सद्भाव का नित प्रचारक रहा ।
सत्य औ' प्रेम की है परम प्रेरणा
देश ! मेरे लिए तू महा अर्चना । [10 अंक]

1(क). कवि का देश को 'महाशील की अमर कल्पना' कहने से क्या तात्पर्य है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि देश को केवल भौगोलिक स्थलों के समूह के रूप में नहीं, उच्च मानवीय मूल्यों के रूप में देखता है।
- महाशील का संबंध महान चरित्र से और अमर कल्पना का संबंध स्थायी नैतिक आदर्श से है।

चरण 1: महाशील का भाव पहचानें महाशील से तात्पर्य महान नैतिक चरित्र तथा उदात्त आचरण से है। कविता देश को सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव का प्रेरक बताती है। इसलिए यह विशेषण देश की केवल भौतिक शक्ति या प्राकृतिक सुंदरता के लिए नहीं है; वह उसकी ऐसी सांस्कृतिक चेतना को प्रकट करता है जो मनुष्य को श्रेष्ठ आचरण की प्रेरणा देती है।

चरण 2: अमर कल्पना को देश से जोड़ें प्रारंभ में कवि हिमालय, गंगा-यमुना, त्रिवेणी और रामेश्वरम् के नाम लेकर स्पष्ट करता है कि उसकी देश-भावना केवल इन स्थलों तक सीमित नहीं है। देश उसके लिए ऐसे महान मूल्यों की चिरस्थायी कल्पना है, जिनकी प्रेरणा पीढ़ियों तक बनी रहती है। इसी कारण वह देश को परम वंदना और महा अर्चना के योग्य मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष देश को महाशील की अमर कल्पना कहने का तात्पर्य है कि भारत कवि के लिए सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव जैसे महान चरित्रगत आदर्शों की चिरस्थायी अभिव्यक्ति है, जो केवल भूगोल से कहीं व्यापक है।

त्वरित सुझाव: महाशील का अर्थ बताने के बाद कविता के सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव को प्रमाण बनाएँ; अमर को स्थायी प्रेरणा से जोड़ें।

1(ख). भारत देश पुरातन होते हुए भी नित नूतन कैसे है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में पुरातन और नया परस्पर विरोधी लगते हुए भी देश की निरंतरता के दो पक्ष हैं।
- प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा तथा सदा प्रासंगिक मानवीय मूल्य एक साथ बने रह सकते हैं।

चरण 1: पुरातनता का आधार समझें भारत की सांस्कृतिक चेतना और प्रकृति से उसका संबंध लंबे समय से चला आ रहा है। कविता में युगों से नदियों द्वारा आचमन कराने तथा देश के परम तत्त्व का विचारक रहने का उल्लेख है। ये संकेत उसकी गहरी और प्राचीन परंपरा को व्यक्त करते हैं। इसलिए पुरातनता का आशय केवल आयु से नहीं, लंबे सांस्कृतिक अनुभव से भी है।

चरण 2: नूतनता का भाव स्पष्ट करें देश की प्राचीनता उसे जड़ नहीं बनाती। सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव के उसके आदर्श प्रत्येक युग में मनुष्य को नई प्रेरणा देते हैं। कविता के लहलहाते खेत-वन देश की जीवंतता का दृश्य भी उपस्थित करते हैं। अपनी मूल मानवीय चेतना को सँजोए हुए निरंतर जीवन और प्रेरणा का स्रोत बने रहना ही उसके नित नूतन होने का भाव है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत प्राचीन संस्कृति और चिंतन का वाहक होने से पुरातन है, किंतु उसके सत्य, प्रेम, शांति और सद्भाव के आदर्श हर युग में नई प्रेरणा देते हैं। इसी जीवंतता के कारण वह पुरातन होते हुए भी नित नूतन है।

त्वरित सुझाव: पुरातन को प्राचीन परंपरा से और नूतन को सदा नई प्रेरणा देने वाले मूल्यों से जोड़ें; कविता से बाहर के उदाहरण आवश्यक नहीं हैं।

1(ग). 'तू परम तत्त्व का नित विचारक रहा' पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ लिखते समय पंक्ति के प्रमुख शब्दों का आशय पूरे काव्यांश के संदर्भ में स्पष्ट किया जाता है।
- यहाँ देश को संबोधित किया गया है; इसलिए परम तत्त्व के विचार से उसकी आध्यात्मिक चिंतन-परंपरा का बोध होता है।

चरण 1: प्रमुख शब्दों का आशय समझें 'परम तत्त्व' से जीवन और जगत के मूल सत्य अथवा सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्ता का संकेत मिलता है। 'नित विचारक' होने का अर्थ है उस सत्य पर निरंतर मनन करना और बाहरी रूपों के पीछे के मूल अर्थ को जानने का प्रयास करना। यहाँ विचारक का आशय केवल किसी एक व्यक्ति से नहीं, देश की चिंतनशील परंपरा से है।

चरण 2: काव्यांश के संदर्भ से भाव स्पष्ट करें कवि बताता है कि भारत की पहचान केवल हिमालय, नदियों और तीर्थों से नहीं बनती। उसका महत्त्व उसके उच्च विचारों और उदात्त मूल्यों में भी है। शक्ति-बल का समर्थक होने के साथ वह जीवन के गहरे आध्यात्मिक प्रश्नों पर विचार करता रहा है। आगे सत्य और प्रेम की प्रेरणा का उल्लेख इसी ऊँची सांस्कृतिक चेतना को पुष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति का भाव है कि भारत सदा जीवन-जगत के मूल सत्य और सर्वोच्च आध्यात्मिक तत्त्व का चिंतन करता रहा है। निरंतर सत्य की खोज उसकी महान आध्यात्मिक परंपरा का परिचायक है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में परम तत्त्व का अर्थ स्पष्ट करके उसे भारत की निरंतर सत्य-खोज और आध्यात्मिक चिंतन से जोड़ें।

1(घ). देश का सत्कार प्रकृति कैसे करती है ? काव्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर में प्रकृति के उन्हीं रूपों और कार्यों का उल्लेख करना चाहिए जिन्हें काव्यांश में देश के सम्मान से जोड़ा गया है।
- नमन और आचमन जैसे शब्द प्रकृति को पूजन करने वाले व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

चरण 1: बादलों और समुद्र का सत्कार पहचानें 'मेघ करते नमन, सिंधु होता चरण' में बादलों को देश के सामने नतमस्तक दिखाया गया है और समुद्र को उसके चरणों में स्थित बताया गया है। प्रकृति के ये विशाल रूप भी देश का आदर करते प्रतीत होते हैं। इससे कवि देश की गरिमा तथा उसके प्रति प्रकृति के भक्तिभाव को व्यक्त करता है।

चरण 2: खेतों, वनों और नदियों की भूमिका समझें देश में हजारों खेत और वन लहलहाकर उसका सौंदर्य और समृद्धि बढ़ाते हैं। नर्मदा, ताप्ती, सिंधु और गोदावरी जैसी नदियाँ युगों से अपने जल द्वारा उसे आचमन कराती हैं। आचमन का उल्लेख पूजन-सत्कार का भाव उत्पन्न करता है। इस प्रकार हरियाली और जलधाराएँ मिलकर देश का निरंतर अभिनंदन करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बादल नमन करते हैं, समुद्र देश के चरणों में रहता है, खेत-वन लहलहाकर उसे सजाते हैं और नर्मदा, ताप्ती, सिंधु तथा गोदावरी अपने जल से आचमन कराती हैं। इस तरह प्रकृति देश का पूजनीय रूप में सत्कार करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर बनाते समय प्रकृति के रूप और उसका कार्य साथ लिखें: मेघ—नमन, खेत-वन—हरियाली तथा नदियाँ—आचमन।

1(ङ). "शांति-संदेश ..... रहा" काव्य-पंक्तियों का अर्थ बताते हुए इस कथन की पुष्टि में इतिहास से कोई एक प्रमाण दीजिए ।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पहले पंक्तियों में व्यक्त शांति तथा प्रेम-सद्भाव के संदेश का अर्थ स्पष्ट करना है।
- प्रश्न ऐतिहासिक प्रमाण भी माँगता है; इसलिए अर्थ समझाने के बाद उसी विचार को सिद्ध करने वाली एक घटना देनी चाहिए।

चरण 1: पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करें 'शांति-संदेश देता रहा विश्व को' और 'प्रेम-सद्भाव का नित प्रचारक रहा' का आशय है कि भारत ने संसार को परस्पर प्रेम, मेल-जोल और शांतिपूर्ण जीवन की प्रेरणा दी है। इस सांस्कृतिक आदर्श में मानवों को वैर और हिंसा बढ़ाने के स्थान पर एक-दूसरे के प्रति सद्भाव रखने का संदेश मिलता है। यह भाव आगे कही गई सत्य और प्रेम की प्रेरणा से भी जुड़ता है।

चरण 2: इतिहास से कथन का प्रमाण दें कलिंग युद्ध की भीषण जनहानि से व्यथित सम्राट अशोक ने युद्ध द्वारा विजय की अपेक्षा धम्म-विजय को महत्त्व दिया। उसने करुणा, अहिंसा और सद्भाव का प्रचार किया। यह घटना दिखाती है कि विनाशकारी संघर्ष की जगह शांति और मानवीय व्यवहार को श्रेष्ठ माना गया; इसलिए अशोक का परिवर्तन इन काव्य-पंक्तियों के समर्थन में उपयुक्त ऐतिहासिक प्रमाण है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में भारत को विश्व में शांति, प्रेम और सद्भाव का संदेश देने वाला कहा गया है। कलिंग युद्ध के बाद अशोक का धम्म-विजय तथा अहिंसा की ओर मुड़ना इस विचार का ऐतिहासिक प्रमाण है।

त्वरित सुझाव: ऐतिहासिक उदाहरण के साथ उसका संबंध भी बताएँ: अशोक का हृदय-परिवर्तन युद्ध से शांति की ओर बढ़ने का प्रमाण है।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था । यही कारण है कि आज तक भारत का मन उस काल की ओर बार-बार लोभ से देखता है । वैदिक आर्य अपने युग को स्वर्णकाल कहते थे या नहीं, यह हम नहीं जानते; किन्तु उनका समय हमें स्वर्णकाल के समान अवश्य दिखाई देता है । लेकिन जब बौद्ध युग का आरम्भ हुआ, वैदिक समाज की पोल खुलने लगी और चिंतकों के बीच उसकी आलोचना आरम्भ हो गई । बौद्ध-युग अनेक दृष्टियों से आज के आधुनिकता-आन्दोलन के समान था । ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के विरुद्ध बुद्ध ने विद्रोह का प्रचार किया था, जाति-प्रथा के बुद्ध विरोधी थे और मनुष्य को वे जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम मानते थे । नारियों को भिक्षुणी होने का अधिकार देकर उन्होंने यह बताया था कि मोक्ष केवल पुरुषों के ही निमित्त नहीं है, उसकी अधिकारिणी नारियाँ भी हो सकती हैं । बुद्ध की ये सारी बातें भारत को याद रही हैं और बुद्ध के समय से बराबर इस देश में ऐसे लोग उत्पन्न होते रहे हैं, जो जाति-प्रथा के विरोधी थे, जो मनुष्य को जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठ या अधम समझते थे । किन्तु बुद्ध में आधुनिकता से बेमेल बात यह थी कि वे निवृत्तिवादी थे, गृहस्थी के कर्म से वे भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ समझते थे । उनकी प्रेरणा से देश के हजारों-लाखों युवक, जो उत्पादन बढ़ाकर समाज का भरण-पोषण करने के लायक़ थे, संन्यासी हो गए । संन्यास की संस्था समाज-विरोधिनी संस्था है । [10 अंक]

2(क). वैदिक युग स्वर्णकाल के समान क्यों प्रतीत होता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश के अनुसार कारण बताना है; वैदिक युग के विषय में बाहर की जानकारी जोड़ना आवश्यक नहीं है।
- लेखक ने वैदिक युग के स्वाभाविक स्वरूप और उसके प्रति आज भी बने आकर्षण को स्वर्णकाल की अनुभूति से जोड़ा है।

चरण 1: सीधे दिए गए कारण को पहचानें गद्यांश का आरंभिक कथन है कि वैदिक युग भारत का 'प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था'। लेखक इसी स्वाभाविकता को उस समय की प्रमुख विशेषता मानता है। प्रश्न में 'क्यों' पूछा गया है, इसलिए उत्तर का आधार यही विशेषता होगी, न कि उस समय की संपत्ति या राजनीतिक शक्ति के बारे में कोई अतिरिक्त कल्पना।

चरण 2: आज के आकर्षण से कारण का संबंध जोड़ें उस युग की स्वाभाविकता के कारण भारत का मन आज भी बार-बार उसकी ओर आकृष्ट होता है। लेखक स्पष्ट करता है कि वैदिक आर्य अपने समय को स्वर्णकाल कहते थे या नहीं, यह ज्ञात नहीं है। इसलिए स्वर्णकाल कहना वर्तमान से उस युग को देखने वाले लेखक का मूल्यांकन है; इसे उस समय के लोगों द्वारा दी गई उपाधि नहीं मानना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष वैदिक युग भारत का प्रायः सबसे अधिक स्वाभाविक काल था। उसकी इसी विशेषता के कारण भारत का मन आज भी उसकी ओर आकर्षित होता है और वह युग हमें स्वर्णकाल के समान प्रतीत होता है।

त्वरित सुझाव: कारण के लिए गद्यांश की शुरुआती दो पंक्तियाँ लें; वैदिक आर्यों ने स्वयं उसे स्वर्णकाल कहा था, ऐसा दावा न करें।

2(ख). जाति-प्रथा एवं नारियों के विषय में बुद्ध के विचारों को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दोनों विषयों—जाति-प्रथा और नारियों—को अलग-अलग स्पष्ट करना आवश्यक है।
- उत्तर का आधार गद्यांश में बताए गए जन्म-कर्म के भेद तथा स्त्रियों के आध्यात्मिक अधिकार हैं।

चरण 1: जाति-प्रथा के विषय में विचार बताएँ बुद्ध जाति-प्रथा और जन्म के आधार पर ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के विरोधी थे। उनके अनुसार कोई व्यक्ति ऊँचे कुल में जन्म लेने मात्र से श्रेष्ठ नहीं हो जाता और न निम्न समझी जाने वाली जाति में जन्म लेने से अधम हो जाता है। मनुष्य की श्रेष्ठता अथवा अधमता का आधार उसके कर्म होने चाहिए। इसी कारण उन्होंने जन्म-आधारित ऊँच-नीच का विरोध किया।

चरण 2: नारियों के विषय में दृष्टि स्पष्ट करें बुद्ध ने नारियों को भिक्षुणी बनने का अधिकार दिया। इसके द्वारा उन्होंने बताया कि मोक्ष का अधिकार केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है; नारियाँ भी उसकी अधिकारिणी हो सकती हैं। गद्यांश में यह कार्य स्त्रियों को आध्यात्मिक साधना का अवसर देने के रूप में आया है। इससे बुद्ध का स्त्री-पुरुषों के आध्यात्मिक अधिकारों के प्रति समानतापूर्ण दृष्टिकोण प्रकट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष बुद्ध जाति-प्रथा के विरोधी थे और जन्म की अपेक्षा कर्म के आधार पर मनुष्य को श्रेष्ठ या अधम मानते थे। उन्होंने नारियों को भिक्षुणी बनने का अधिकार देकर उन्हें भी मोक्ष की अधिकारिणी माना।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दो स्पष्ट बिंदु रखें: जाति के लिए जन्म नहीं, कर्म; नारियों के लिए भिक्षुणी बनने और मोक्ष पाने का अधिकार।

2(ग). बुद्ध की कौन-सी बात आधुनिकता के प्रसंग में ठीक नहीं बैठती ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर लेखक के मूल्यांकन के अनुसार देना है; बुद्ध के पूरे दर्शन पर सामान्य टिप्पणी नहीं करनी है।
- गद्यांश सामाजिक समानता संबंधी विचारों को आधुनिक मानता है, पर निवृत्तिवाद को आधुनिकता से बेमेल बताता है।

चरण 1: आधुनिकता से बेमेल विचार पहचानें लेखक के अनुसार बुद्ध निवृत्तिवादी थे, अर्थात सांसारिक तथा गृहस्थ जीवन के कर्मों से हटने को महत्त्व देते थे। वे गृहस्थी के कर्म की अपेक्षा भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ समझते थे। प्रश्न में इसी एक बात को पूछा गया है; जाति-विरोध और स्त्रियों के मोक्षाधिकार को गद्यांश आधुनिकता के विपरीत नहीं बताता।

चरण 2: बेमेल होने का कारण समझें गद्यांश के अनुसार उनकी प्रेरणा से ऐसे हजारों-लाखों युवक संन्यासी हो गए जो उत्पादन बढ़ाकर समाज का भरण-पोषण कर सकते थे। लेखक की आपत्ति इस सामाजिक परिणाम पर है। आधुनिकता के प्रसंग में समाज की सक्रिय प्रगति और उपयोगी कर्म महत्त्वपूर्ण हैं; इसलिए उत्पादक गृहस्थ जीवन से निवृत्ति को श्रेष्ठ मानना उसके अनुकूल नहीं बैठता।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के अनुसार बुद्ध का निवृत्तिवाद आधुनिकता से मेल नहीं खाता। वे गृहस्थी के कर्म से भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ समझते थे; इससे बहुत से उत्पादक युवक संन्यास लेकर समाज के भरण-पोषण वाले कार्यों से अलग हो गए।

त्वरित सुझाव: सही शब्द निवृत्तिवाद है; उसके साथ गृहस्थ कर्म से भिक्षु-धर्म को श्रेष्ठ मानने और उत्पादन पर प्रभाव का संबंध स्पष्ट करें।

2(घ). संन्यास की संस्था से समाज को क्या हानि पहुँचती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न संन्यास के संबंध में लेखक द्वारा बताई गई सामाजिक हानि पूछता है।
- कारण और परिणाम का क्रम है: सक्षम युवकों का संन्यास, उत्पादन में भागीदारी का अभाव और समाज के भरण-पोषण को हानि।

चरण 1: समाज से अलग होने वाली शक्ति पहचानें गद्यांश में बताया गया है कि हजारों-लाखों ऐसे युवक संन्यासी बन गए जो उत्पादन बढ़ाने और समाज का भरण-पोषण करने में सक्षम थे। लेखक का ध्यान इन युवकों की कार्यक्षमता पर है। सक्रिय गृहस्थ जीवन में वे श्रम तथा उपयोगी कार्यों के द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में योगदान दे सकते थे।

चरण 2: सामाजिक हानि का कारण स्पष्ट करें संन्यास लेने से ये युवक उत्पादक गृहस्थ कार्यों से हट गए। परिणामतः समाज को उनके श्रम से मिलने वाले उत्पादन और भरण-पोषण के योगदान का लाभ नहीं मिल पाया। लेखक इसी उपयोगी जनशक्ति के उत्पादक कार्यों से अलग हो जाने को सामाजिक हानि मानता है और इसी संदर्भ में संन्यास की संस्था को समाज-विरोधिनी कहता है। यह उत्तर गद्यांश में व्यक्त उसकी दृष्टि को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के अनुसार संन्यास की संस्था सक्षम युवकों को उत्पादन तथा गृहस्थ जीवन के उपयोगी कार्यों से अलग कर देती है। इससे समाज उनके श्रम और उत्पादन-वृद्धि के योगदान से वंचित होता है तथा उसके भरण-पोषण को हानि पहुँचती है।

त्वरित सुझाव: हानि समझाते समय युवकों की उत्पादक क्षमता और समाज के भरण-पोषण का संबंध लिखें; केवल संन्यास को बुरा कहना पर्याप्त नहीं है।

2(ङ). उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है। उसे किसी एक उदाहरण तक सीमित न रखकर पूरे विचारक्रम से जोड़ना चाहिए।
- इस गद्यांश में वैदिक समाज की पृष्ठभूमि में बुद्ध के सामाजिक सुधारों और उनकी निवृत्तिवादी प्रवृत्ति का मूल्यांकन किया गया है।

चरण 1: गद्यांश का केंद्रीय विषय पहचानिए आरंभ में वैदिक युग के प्रति आकर्षण का उल्लेख है, किंतु आगे मुख्य विवेचन बुद्ध के विचारों पर केंद्रित है। लेखक जाति-प्रथा के विरोध, जन्म के स्थान पर कर्म को महत्त्व देने तथा नारियों को मोक्ष का अधिकार देने जैसे विचारों को आधुनिकता के अनुकूल बताता है। इसलिए केवल वैदिक युग को शीर्षक बनाना पर्याप्त नहीं होगा।

चरण 2: विचारों के दोनों पक्ष समेटिए अंतिम भाग में बुद्ध के निवृत्तिवाद को आधुनिकता से बेमेल बताया गया है और संन्यास के कारण उत्पादक युवकों के समाज से अलग होने की आलोचना की गई है। अत: शीर्षक ऐसा होना चाहिए जिसमें उनके प्रगतिशील सामाजिक विचारों के साथ आधुनिकता से उनकी असंगति का संकेत भी समा सके। 'बुद्ध के विचार और आधुनिकता' इन दोनों पक्षों को संक्षेप में समेटता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: **बुद्ध के विचार और आधुनिकता**।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय गद्यांश के आरंभ और अंत को मिलाकर देखिए; यहाँ आधुनिकता से मेल और बेमेल, दोनों का केंद्र बुद्ध के विचार हैं।

---

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

(क) धन-संग्रह की बढ़ती हुई प्रवृत्ति

(ख) वैवाहिक जीवन में बढ़ता तनाव

(ग) दूरदर्शन के कार्यक्रमों का नवयुवकों पर प्रभाव

(घ) प्रदूषण-नियंत्रण में हमारा योगदान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार होता है। भाषा स्पष्ट, विचार विषयानुकूल और अनुच्छेद एक-दूसरे से जुड़े होने चाहिए।
- लगभग 200 शब्दों के निबंध में समस्या के स्वरूप, कारण, प्रभाव और समाधान को संतुलित स्थान देना उपयोगी है।

चरण 1: प्रारूप और विषयों की रूपरेखा बनाइए परीक्षा में चारों में से किसी एक विषय पर लिखना है। अभ्यास के लिए नीचे चारों के स्वतंत्र नमूने दिए गए हैं। धन-संग्रह पर लिखते समय आवश्यकता और लोभ का अंतर, वैवाहिक तनाव में संवाद और समानता, दूरदर्शन के प्रभाव में लाभ और हानि तथा प्रदूषण-नियंत्रण में नागरिक के व्यावहारिक उपाय केंद्र में रखें। हर निबंध को शीर्षक देकर भूमिका, विस्तार और निष्कर्ष वाले अनुच्छेदों में लिखें।

चरण 2: (क) धन-संग्रह की बढ़ती हुई प्रवृत्ति पर निबंध लिखिए **धन-संग्रह की बढ़ती हुई प्रवृत्ति**

धन जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का महत्त्वपूर्ण साधन है। भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य और भविष्य की सुरक्षा के लिए बचत करना उचित है। किंतु जब धन साधन के स्थान पर जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन जाता है, तब संग्रह की प्रवृत्ति समाज के लिए चिंता का विषय बनती है।

आज व्यक्ति की सफलता का मूल्यांकन प्राय: उसकी संपत्ति से किया जाता है। आकर्षक विज्ञापन, दिखावे की संस्कृति और दूसरों से आगे निकलने की होड़ अनावश्यक इच्छाएँ बढ़ाते हैं। भविष्य की असुरक्षा भी लोगों को निरंतर धन जोड़ने के लिए प्रेरित करती है। इस

दौड़ में कई लोग साधनों की शुद्धता भूल जाते हैं।

अत्यधिक धनलिप्सा से भ्रष्टाचार, शोषण और आर्थिक असमानता बढ़ सकती है। परिवार के लिए समय कम पड़ता है और संबंधों में आत्मीयता के स्थान पर स्वार्थ आने लगता है। अधिक पाने की चिंता व्यक्ति की मानसिक शांति भी छीन लेती है। इस प्रकार साधन बढ़ने पर भी संतोष घट सकता है।

इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण के लिए धन कमाने की इच्छा छोड़ना आवश्यक नहीं है। आवश्यक है ईमानदार श्रम, विवेकपूर्ण खर्च और सीमित इच्छाओं का अभ्यास। बच्चों को सहयोग, संतोष तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का मूल्य सिखाना चाहिए। धन का सदुपयोग अपने विकास के साथ दूसरों की सहायता में भी हो, तभी समृद्धि सार्थक बनती है।

चरण 3: (ख) वैवाहिक जीवन में बढ़ते तनाव पर निबंध लिखिए **वैवाहिक जीवन में बढ़ता तनाव**

वैवाहिक जीवन का आधार प्रेम, विश्वास और पारस्परिक सम्मान है। पति-पत्नी का संबंध केवल सामाजिक व्यवस्था नहीं, बल्कि साझा जीवन की जिम्मेदारी भी है। आज बदलती जीवनशैली और बढ़ती अपेक्षाओं के बीच अनेक परिवारों में तनाव दिखाई देता है। इसका प्रभाव दंपती के साथ बच्चों और अन्य सदस्यों पर भी पड़ता है।

तनाव का प्रमुख कारण संवाद का अभाव है। काम की व्यस्तता, आर्थिक दबाव और समय की कमी से छोटी गलतफहमियाँ बढ़ जाती हैं। घरेलू कार्यों का असमान बँटवारा, एक-दूसरे की स्वतंत्रता की उपेक्षा तथा अनावश्यक पारिवारिक हस्तक्षेप भी संबंधों को प्रभावित करते हैं। दूसरों के जीवन से लगातार तुलना करने पर अपनी उपलब्धियाँ भी कम लगने लगती हैं।

मतभेद होना स्वाभाविक है, किंतु अपमान और हिंसा को सामान्य मतभेद मानना उचित नहीं है। स्वस्थ संबंध में दोनों व्यक्तियों की गरिमा तथा सुरक्षा बनी रहनी चाहिए। बच्चों के सामने लगातार झगड़े उनके आत्मविश्वास और भावनात्मक विकास को भी प्रभावित कर सकते हैं।

समाधान के लिए नियमित संवाद, धैर्य और जिम्मेदारियों का न्यायपूर्ण बँटवारा आवश्यक है। आर्थिक निर्णय मिलकर लेने और एक-दूसरे के श्रम की सराहना करने से विश्वास बढ़ता है। जरूरत पड़ने पर योग्य परामर्शदाता की सहायता ली जा सकती है। दांपत्य में जीत किसी एक की नहीं, संबंध में सम्मान और सहयोग की होनी चाहिए।

चरण 4: (ग) दूरदर्शन के प्रभाव पर निबंध लिखिए **दूरदर्शन के कार्यक्रमों का नवयुवकों पर प्रभाव**

दूरदर्शन सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का प्रभावशाली माध्यम है। दृश्य और ध्वनि के मेल के कारण उसके कार्यक्रम दर्शकों को शीघ्र आकर्षित करते हैं। नवयुवक नई बातों को जानने और अपनाने के लिए उत्सुक रहते हैं, इसलिए उन पर दूरदर्शन का प्रभाव विशेष रूप से पड़ता है।

समाचार और परिचर्चाएँ देश-दुनिया की जानकारी देती हैं। विज्ञान, इतिहास तथा पर्यावरण संबंधी कार्यक्रम ज्ञान बढ़ाते हैं और जिज्ञासा जगाते हैं। खेल प्रसारण परिश्रम, अनुशासन और टीम भावना की प्रेरणा दे सकते हैं। साहित्य, संगीत और संस्कृति से जुड़े कार्यक्रम युवाओं को विविध परंपराओं से परिचित कराते हैं। उपयोगी कार्यक्रम शिक्षा के सहायक भी बन सकते हैं।

दूसरी ओर, हिंसा, अश्लीलता और भ्रामक विज्ञापन अपरिपक्व दर्शकों को प्रभावित कर सकते हैं। आकर्षक जीवनशैली का अंधानुकरण अनावश्यक खर्च और असंतोष बढ़ाता है। लगातार कार्यक्रम देखने से पढ़ाई, व्यायाम तथा पारिवारिक संवाद का समय घट जाता है। काल्पनिक घटनाओं को वास्तविक जीवन का आदर्श मान लेना भी हानिकारक है।

इसलिए दूरदर्शन का प्रभाव उसके विवेकपूर्ण उपयोग पर निर्भर करता है। युवाओं को कार्यक्रमों का चयन सोच-समझकर करना और देखने का समय निश्चित रखना चाहिए। अभिभावक तथा शिक्षक चर्चा द्वारा आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर सकते हैं। प्रसारकों को भी स्वस्थ मनोरंजन और विश्वसनीय जानकारी देनी चाहिए। संतुलित उपयोग से दूरदर्शन व्यक्तित्व-विकास का उपयोगी साधन बन सकता है।

चरण 5: (घ) प्रदूषण-नियंत्रण में योगदान पर निबंध लिखिए **प्रदूषण-नियंत्रण में हमारा योगदान**

स्वच्छ वायु, निर्मल जल और स्वस्थ भूमि जीवन की मूल आवश्यकताएँ हैं। बढ़ते वाहनों, औद्योगिक कचरे तथा अव्यवस्थित उपभोग ने पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुँचाई है। प्रदूषण से मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी और वनस्पतियाँ भी प्रभावित होते हैं। इसका नियंत्रण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, हम सभी का सामूहिक दायित्व है।

हम दैनिक जीवन में छोटे परिवर्तन करके उपयोगी योगदान दे सकते हैं। छोटी दूरी पैदल या साइकिल से तय करना और सार्वजनिक परिवहन अपनाना ईंधन की खपत घटाता है। वाहनों की नियमित जाँच तथा अनावश्यक इंजन बंद रखने से धुएँ में कमी आती है। पेड़ लगाना और उनकी देखभाल करना भी आवश्यक है।

घर का गीला और सूखा कचरा अलग रखना चाहिए। जैविक कचरे से खाद बनाई जा सकती है और पुनर्चक्रण योग्य वस्तुएँ उचित संग्रह

केंद्रों तक पहुँचाई जा सकती हैं। एक बार उपयोग होने वाले प्लास्टिक से बचना, कपड़े के थैले अपनाना तथा कूड़ा न जलाना प्रभावी उपाय हैं। नालियों और जलस्रोतों में कचरा डालने से बचना चाहिए।

पानी तथा बिजली की बचत, अनावश्यक हॉर्न और तेज ध्वनि से परहेज भी हमारा योगदान है। विद्यालयों और मोहल्लों में जागरूकता अभियान चलाकर सामूहिक सहभागिता बढ़ाई जा सकती है। नियमों का पालन और जिम्मेदार आदतें मिलकर बड़ा परिवर्तन लाती हैं। स्वच्छ पर्यावरण हमारी सुविधा ही नहीं, आने वाली पीढ़ियों का अधिकार भी है।

चरण 6: निष्कर्ष प्रत्येक निबंध में विषय की भूमिका, मुख्य पक्षों का विवेचन और समाधानपूर्ण उपसंहार दिया गया है। परीक्षा में चुने गए एक विषय पर लगभग 200 शब्दों में इसी प्रकार क्रमबद्ध विचार प्रस्तुत करें।

त्वरित सुझाव: निबंध शुरू करने से पहले चार संकेत लिख लें: विषय की पहचान, कारण, प्रभाव और समाधान; इससे लगभग 200 शब्दों में विचार संतुलित रहेंगे।

4. रेल के वातानुकूलित डिब्बे में मुम्बई से अमृतसर की यात्रा के दौरान रात के समय आपकी अटैची चोरी हो गई है । अटैची और सामान का पूरा विवरण देते हुए सम्बद्ध स्टेशन के पुलिस अधिकारी के नाम शिकायती पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत-पत्र औपचारिक पत्र है। इसमें प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, तथ्यपूर्ण विवरण, कार्रवाई का अनुरोध तथा हस्ताक्षर होते हैं।
- चोरी की शिकायत में यात्रा का विवरण, घटना का समय और स्थान, सामान की पहचान तथा उसकी अनुमानित कीमत स्पष्ट लिखनी चाहिए, ताकि जाँच और पहचान में सहायता मिले।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और आवश्यक विवरण तय कीजिए संबद्ध स्टेशन की राजकीय रेलवे पुलिस के थाना प्रभारी को पत्र लिखें। पहले मुंबई से अमृतसर की वातानुकूलित डिब्बे वाली यात्रा और रात में चोरी होने की घटना बताएँ। फिर अटैची का रंग, आकार, पहचान-चिह्न, अंदर रखे सामान और मूल्य का विवरण दें। अंत में शिकायत दर्ज करने, जाँच कराने तथा सामान मिलने पर सूचित करने का विनम्र अनुरोध करें। भाषा तथ्यपूर्ण हो; किसी अनजान व्यक्ति पर बिना आधार आरोप न लगाएँ।

चरण 2: पूर्ण शिकायती पत्र लिखिए 24, मॉडल टाउन

अमृतसर, पंजाब

18 मार्च, 2008

सेवा में,

थाना प्रभारी

राजकीय रेलवे पुलिस

लुधियाना रेलवे स्टेशन, पंजाब

विषय: मुंबई से अमृतसर की रेलयात्रा के दौरान अटैची चोरी होने की शिकायत।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं 16 मार्च, 2008 को मुंबई से अमृतसर जाने वाली पश्चिम एक्सप्रेस के वातानुकूलित तृतीय श्रेणी डिब्बे बी-1 की बर्थ संख्या 32 पर यात्रा कर रहा था। 17 मार्च की रात लगभग 11 बजे मैंने अपनी अटैची सीट के नीचे रखकर जंजीर से बाँध दी थी। रात लगभग 1 बजे लुधियाना स्टेशन पर नींद खुलने पर मैंने पाया कि जंजीर कटी हुई थी और अटैची गायब थी। सहयात्रियों से पूछने और आसपास तलाश करने पर भी उसका पता नहीं चला। मैंने तत्काल टिकट निरीक्षक को सूचना दी।

अटैची गहरे नीले रंग की, वी.आई.पी. कंपनी की तथा लगभग 65 सेंटीमीटर लंबी है। उसके दाहिने ऊपरी कोने पर सफेद खरोंच है और हैंडल पर मेरे नाम तथा पते की पर्ची लगी है। उसमें तीन कमीजें, दो पतलूनें, एक भूरे रंग का ऊनी स्वेटर, एक सफेद तौलिया, काले जूतों की एक जोड़ी, निजी प्रमाणपत्रों की फाइल और एक लिफाफे में 4,000 रुपये रखे थे। प्रमाणपत्रों की फाइल में मेरी दसवीं और बारहवीं

की अंकतालिकाएँ थीं। अटैची सहित सामान और नकदी का कुल अनुमानित मूल्य 12,000 रुपये है।

कृपया मेरी शिकायत दर्ज कर घटना की जाँच कराएँ और अटैची तथा सामान खोजने की कार्रवाई करें। सामान मिलने अथवा अतिरिक्त जानकारी की आवश्यकता होने पर मेरे उपर्युक्त पते पर सूचित करें। यात्रा टिकट की छायाप्रति और सामान के मूल्य का विवरण संलग्न है।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

संलग्नक: यात्रा टिकट की छायाप्रति; सामान की सूची तथा अनुमानित मूल्य।

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में यात्रा, चोरी का समय, संबंधित स्टेशन, अटैची के पहचान-चिह्न, सामान और नकदी का विवरण देकर शिकायत दर्ज करने तथा खोजबीन का स्पष्ट अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: चोरी के शिकायत-पत्र में तीन विवरण अवश्य जाँचें: यात्रा और बर्थ, घटना का समय तथा सामान की पहचान; इनके बाद अपेक्षित पुलिस कार्रवाई लिखें।

अथवा

4. आपका मित्र जो स्कूल की हॉकी टीम का कैप्टन था, अब पूरे प्रान्त की टीम का कैप्टन बना दिया गया है । इस उपलब्धि के लिए उसे बधाई-पत्र लिखकर उसकी भावी उन्नति के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मित्र को लिखा गया बधाई-पत्र अनौपचारिक होता है। इसमें आत्मीय भाषा, उपलब्धि की प्रशंसा और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ मुख्य होती हैं।
- पत्र का क्रम है—प्रेषक का पता, दिनांक, आत्मीय संबोधन, अभिवादन, मुख्य विषय, समापन और प्रेषक का नाम।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और भाषा तय करना यह पत्र किसी अधिकारी को नहीं, अपने मित्र को लिखा जा रहा है। इसलिए संबोधन में प्रिय मित्र और समापन में तुम्हारा मित्र उपयुक्त हैं। औपचारिक पत्र की तरह विषय-पंक्ति या प्राप्तकर्ता का कार्यालयी पता आवश्यक नहीं है। भाषा सरल, स्नेहपूर्ण और उत्साह बढ़ाने वाली रखनी चाहिए। नीचे दिए नमूने में नाम और पता उदाहरण के लिए लिए गए हैं।

चरण 2: विषयवस्तु की रूपरेखा बनाना पहले प्रान्त की हॉकी टीम का कप्तान चुने जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करेंगे। फिर विद्यालय की टीम के कप्तान से प्रान्त की टीम के कप्तान बनने की प्रगति को मेहनत, अनुशासन और नेतृत्व से जोड़ेंगे। अंत में नई जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाने तथा आगे राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने की शुभकामनाएँ देंगे। राष्ट्रीय टीम में चयन को भविष्य की आशा के रूप में ही लिखना है, हो चुकी उपलब्धि के रूप में नहीं।

चरण 3: पूर्ण नमूना पत्र 25, अशोक नगर

लखनऊ

29 मार्च, 2008

प्रिय मित्र अमित,

सप्रेम नमस्कार।

तुम्हें प्रान्त की हॉकी टीम का कप्तान बनाए जाने का समाचार सुनकर बहुत खुशी हुई। इस शानदार उपलब्धि पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। विद्यालय की टीम के कप्तान से प्रान्त की टीम का कप्तान बनना तुम्हारी लगन, नियमित अभ्यास और कुशल नेतृत्व का सुखद परिणाम है।

मुझे विश्वास है कि तुम अपने साथियों का उत्साह बढ़ाते हुए पूरी टीम को साथ लेकर चलोगे। जीत के साथ खेल-भावना, अनुशासन और सहयोग को महत्त्व देने का तुम्हारा स्वभाव इस जिम्मेदारी को निभाने में सहायक होगा। तुम्हारी सफलता हम सभी मित्रों के लिए प्रेरणा

है।

मेरी शुभकामना है कि तुम्हारे नेतृत्व में प्रान्त की टीम उत्कृष्ट प्रदर्शन करे। तुम निरंतर आगे बढ़ो और एक दिन राष्ट्रीय टीम में स्थान पाकर देश का गौरव बढ़ाओ। अभ्यास के साथ अपने स्वास्थ्य और पढ़ाई का भी ध्यान रखना।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना। तुम्हारी आगामी प्रतियोगिताओं में सफलता की मंगलकामनाओं सहित।

तुम्हारा मित्र

राहुल

चरण 4: निष्कर्ष इस बधाई-पत्र में मित्र की वर्तमान उपलब्धि पर आत्मीय प्रसन्नता, उसके परिश्रम की सराहना और भावी उन्नति के लिए शुभकामनाएँ व्यक्त की गई हैं।

त्वरित सुझाव: बधाई-पत्र में मिली हुई उपलब्धि स्पष्ट लिखें और भविष्य की आकांक्षा को शुभकामना के रूप में व्यक्त करें।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'प्रिंट माध्यम' से आप क्या समझते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रिंट का अर्थ मुद्रण है। मुद्रित शब्दों तथा चित्रों के माध्यम से सूचना और विचार पाठकों तक पहुँचाए जाते हैं।
- समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें मुद्रित माध्यम के परिचित उदाहरण हैं।

चरण 1: माध्यम की पहचान यहाँ प्रश्न सूचना पहुँचाने की उस विधि के बारे में है जिसमें सामग्री कागज पर छापी जाती है। पाठक उसे पढ़कर जानकारी प्राप्त करता है और आवश्यकता होने पर उसे दोबारा भी पढ़ सकता है।

चरण 2: परिभाषा के आवश्यक तत्व उत्तर में छपाई और लिखित सामग्री का उल्लेख आवश्यक है। रेडियो श्रव्य और टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यम हैं; केवल सूचना देने के कारण वे प्रिंट माध्यम नहीं कहलाते।

चरण 3: निष्कर्ष कागज पर मुद्रित शब्दों और चित्रों द्वारा सूचना, समाचार तथा विचार प्रसारित करने वाले माध्यम को प्रिंट या मुद्रित माध्यम कहते हैं; जैसे समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में कागज पर छपी सामग्री लिखें और समाचार-पत्र जैसा एक स्पष्ट उदाहरण जोड़ दें।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

स्तंभ-लेखन का क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्तंभ-लेखन समाचार-पत्र या पत्रिका में नियमित रूप से प्रकाशित होने वाली विशिष्ट लेखन-विधा है।
- स्तंभ में लेखक अपनी विशिष्ट शैली और दृष्टिकोण से किसी विषय पर विचार प्रस्तुत करता है।

चरण 1: नियमितता को पहचानना स्तंभ सामान्यत: किसी निश्चित नाम या शीर्षक के अंतर्गत नियत स्थान पर नियमित अंतराल से प्रकाशित होता है। उसका विषय राजनीति, समाज, साहित्य, खेल अथवा अन्य क्षेत्र हो सकता है।

चरण 2: सामान्य समाचार से भेद समाचार का मुख्य उद्देश्य घटना की सूचना देना है, जबकि स्तंभ में लेखक की व्यक्तिगत दृष्टि, टिप्पणी और विश्लेषण प्रमुख होते हैं। केवल किसी पृष्ठ के खड़े हिस्से को स्तंभ कहना यहाँ अपेक्षित अर्थ नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-पत्र या पत्रिका में किसी निश्चित शीर्षक के अंतर्गत नियमित रूप से प्रकाशित, लेखक के अपने विचारों और

विशिष्ट शैली वाले लेखन को स्तंभ-लेखन कहते हैं।

त्वरित सुझाव: स्तंभ-लेखन समझाते समय नियमित प्रकाशन और लेखक के अपने दृष्टिकोण—इन दोनों विशेषताओं को जोड़ें।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

संपादकीय में लेखक का नाम क्यों नहीं दिया जाता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर समाचार-पत्र की नीति और संस्थागत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।
- संपादकीय की जिम्मेदारी पूरे समाचार-पत्र या संपादकीय मंडल की होती है, केवल किसी व्यक्तिगत लेखक की नहीं।

चरण 1: लेख का प्रतिनिधित्व समझना संपादकीय लिखने वाला व्यक्ति कोई संपादक या संपादकीय सहयोगी हो सकता है, पर प्रकाशित विचार समाचार-पत्र की ओर से रखे जाते हैं। इसलिए उसे व्यक्तिगत विचार-लेख की तरह नहीं पढ़ा जाता।

चरण 2: नाम न देने का कारण लेखक का नाम देने से विचार किसी एक व्यक्ति के निजी मत के रूप में दिखाई दे सकते हैं। नाम न देना उसके संस्थागत स्वरूप को स्पष्ट करता है; इसका कारण लेखक की पहचान छिपाना या उसकी योग्यता कम होना नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय में लेखक का नाम इसलिए नहीं दिया जाता क्योंकि उसमें किसी व्यक्ति का निजी मत नहीं, समाचार-पत्र की नीति और संस्थागत विचार व्यक्त होते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को समाचार-पत्र की सामूहिक नीति से जोड़ें; केवल इतना कहना पर्याप्त नहीं कि यह संपादक लिखता है।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

हिन्दी में प्रकाशित होने वाले किन्हीं चार राष्ट्रीय समाचार-पत्रों के नाम लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में हिन्दी में प्रकाशित होने वाले राष्ट्रीय स्तर पर परिचित समाचार-पत्रों के नाम माँगे गए हैं।
- समाचार-पत्रों के स्थान पर पत्रिकाओं, समाचार एजेंसियों या टेलीविजन चैनलों के नाम नहीं देने चाहिए।

चरण 1: उपयुक्त प्रकाशनों का चयन ऐसे परिचित हिन्दी दैनिक चुनेंगे जिनके पाठक और प्रसार अनेक क्षेत्रों में हैं। राष्ट्रीय समाचार-पत्र का अर्थ सरकारी स्वामित्व वाला समाचार-पत्र नहीं है; यहाँ व्यापक पहुँच वाले हिन्दी समाचार-पत्र अपेक्षित हैं।

चरण 2: संख्या और भाषा की जाँच प्रश्न में चार नाम माँगे गए हैं, इसलिए चार अलग समाचार-पत्र ही लिखने हैं। नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, अमर उजाला और हिन्दुस्तान हिन्दी में प्रकाशित समाचार-पत्र हैं; इन्हें अंग्रेजी दैनिकों या पत्रिकाओं से नहीं मिलाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष हिन्दी के चार राष्ट्रीय समाचार-पत्र हैं—नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, अमर उजाला और हिन्दुस्तान।

त्वरित सुझाव: चार नाम लिखने के बाद जाँच लें कि सभी हिन्दी समाचार-पत्र हों, समाचार चैनल या मासिक पत्रिकाएँ नहीं।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

अंशकालिक संवाददाता किसे कहा जाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संवाददाता समाचार एकत्र करके समाचार-संगठन को भेजने वाला व्यक्ति होता है।
- अंशकालिक संवाददाता अपना पूरा कार्य-समय किसी एक समाचार-संगठन को नहीं देता।

चरण 1: कार्य-समय का आधार पहचानना अंशकालिक का अर्थ है आंशिक समय के लिए कार्य करना। ऐसा संवाददाता किसी समाचार-पत्र या अन्य समाचार-संगठन के लिए नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी की तरह सारा समय काम नहीं करता।

चरण 2: काम और पारिश्रमिक स्पष्ट करना वह अपने क्षेत्र की घटनाओं के समाचार जुटाकर संगठन को भेजता है। उसे सामान्यत: भेजे या प्रकाशित समाचारों के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है। पत्रकारिता में ऐसे संवाददाता को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है; उसका प्रमुख लक्षण पूर्णकालिक न होना है।

चरण 3: निष्कर्ष जो संवाददाता किसी समाचार-संगठन के लिए आंशिक समय में समाचार जुटाता और भेजता है तथा सामान्यत: समाचारों के आधार पर पारिश्रमिक पाता है, उसे अंशकालिक संवाददाता या स्ट्रिंगर कहते हैं।

त्वरित सुझाव: अंशकालिक संवाददाता की परिभाषा में आंशिक समय और समाचार भेजने का काम लिखें; उसे पूर्णकालिक कर्मचारी न बताएँ।

---

6. 'कृषकों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति' विषय पर लगभग 150 शब्दों में एक फ़ीचर का आलेख तैयार कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय के मानवीय पक्ष को रोचक, संवेदनशील और तथ्यसम्मत शैली में सामने लाता है। इसमें आकर्षक शीर्षक, प्रभावशाली आरंभ और विचारपूर्ण समापन होता है।
- कृषक आत्महत्या जैसे गंभीर विषय पर पीड़ित परिवार के प्रति संवेदना रखते हुए आर्थिक और सामाजिक कारण स्पष्ट करने चाहिए। किसी काल्पनिक घटना, आँकड़े अथवा कथन को वास्तविक समाचार बनाकर प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना बनाइए शीर्षक में अन्नदाता की पीड़ा उभारिए और उसके नीचे लेखक का नाम दीजिए। आरंभ खेत तथा किसान के परिवार की चिंता से करें। मुख्य भाग में बढ़ती लागत, ऋण, मौसम की अनिश्चितता और उपज का पर्याप्त मूल्य न मिलने का संबंध समझाएँ। अंत में समय पर सहायता, उचित मूल्य, सिंचाई और भावनात्मक सहारे जैसे व्यावहारिक उपाय रखें। नीचे प्रस्तुत नमूने के मुख्य आलेख को लगभग 150 शब्दों में रखा गया है।

चरण 2: पूरा फ़ीचर प्रस्तुत कीजिए **अन्न उगाने वाले की सूनी आँखें**

लेखक: अजय

खेतों की हरियाली देश का पेट भरती है, लेकिन किसान के घर का चूल्हा चिंता से घिरा रहता है। कभी सूखा, कभी बेमौसम बारिश और कभी उपज के गिरते दाम उसकी मेहनत पर पानी फेर देते हैं। बढ़ती कृषि लागत और महँगा कर्ज इस असुरक्षा को और गहरा करते हैं।

कृषकों की आत्महत्या केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं, पूरे परिवार के सपनों का बिखरना है। पीछे छूटे बच्चों की पढ़ाई, बुजुर्गों की देखभाल और घर की रोजी पर संकट आ जाता है। आर्थिक दबाव के साथ अकेलापन और सामाजिक तनाव भी किसान की परेशानी बढ़ा सकते हैं।

इस पीड़ा का उत्तर केवल संवेदना नहीं, ठोस सहायता है। सस्ता संस्थागत ऋण, समय पर बीमा भुगतान, उचित मूल्य और भरोसेमंद सिंचाई आवश्यक हैं। गाँवों में परामर्श तथा सामुदायिक सहयोग भी सुलभ हों। संकट में किसान को अकेला न छोड़ना समाज की जिम्मेदारी है। अन्नदाता का जीवन सुरक्षित होगा, तभी खेतों की हरियाली सच्ची खुशहाली बनेगी।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर किसान की आर्थिक कठिनाइयों और परिवार पर पड़ने वाले प्रभाव को मानवीय दृष्टि से प्रस्तुत करता है। इसका

समापन सहायता तथा जीवन की सुरक्षा पर केंद्रित है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में पहले किसान के परिवार की चिंता उभारें, फिर कारण बताएँ और अंत में सहायता के उपाय रखें; सनसनीखेज वर्णन तथा अप्रमाणित आँकड़े न जोड़ें।

अथवा

6. 'शहरों का दमघोंटू वातावरण' विषय पर लगभग 150 शब्दों में एक फ़ीचर का आलेख तैयार कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में विषय का सजीव परिचय देकर उसके कारण, प्रभाव और मानवीय पक्ष को सहज भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। आकर्षक शीर्षक तथा प्रभावशाली समापन पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।
- शहरों के दमघोंटू वातावरण पर लिखते समय धुआँ, धूल, यातायात, शोर और हरियाली की कमी को नागरिक जीवन से जोड़ना चाहिए। बिना प्रमाण के आँकड़े देने के स्थान पर स्पष्ट और सामान्य अनुभवों का सहारा लिया जा सकता है।

चरण 1: फ़ीचर का प्रारूप और योजना बनाइए शहर की साँसों से जुड़ा रोचक शीर्षक दें और नीचे लेखक का नाम लिखें। आरंभ में धुएँ और भीड़ से घिरी सुबह का दृश्य उभारें। आगे प्रदूषण के स्रोत और बच्चों, बुजुर्गों तथा सामान्य नागरिकों पर प्रभाव बताएँ। अंत में सार्वजनिक परिवहन, धूल नियंत्रण, हरियाली और नागरिक सहयोग का समाधान रखें। आलेख को लगभग 150 शब्दों में रखते हुए अनावश्यक विस्तार से बचें।

चरण 2: पूरा फ़ीचर लिखिए **शहर की साँसों पर धुएँ का पहरा**

लेखक: अजय

सुबह की ताजी हवा की तलाश में खिड़की खोलिए तो सामने धुएँ और धूल से ढकी सड़क दिखाई देती है। वाहनों की कतारें, लगातार बजते हॉर्न और निर्माण स्थलों से उड़ती मिट्टी शहर की पहचान बनते जा रहे हैं। ऊँची इमारतों के बीच पेड़ों की जगह सिकुड़ रही है और खुलकर साँस लेना कठिन लगने लगा है।

वाहनों तथा कारखानों का धुआँ, खुले में जलता कूड़ा और अनियोजित निर्माण वातावरण को दूषित करते हैं। इसका असर बच्चों, बुजुर्गों और साँस के रोगियों पर अधिक पड़ता है। शोर तथा भीड़ मानसिक थकान भी बढ़ाते हैं। सुविधाओं की चमक के पीछे स्वास्थ्य की यह कीमत अक्सर अनदेखी रह जाती है।

शहर को राहत देने के लिए भरोसेमंद सार्वजनिक परिवहन, निर्माण की धूल पर नियंत्रण और कचरे का उचित निस्तारण जरूरी है। पेड़ बचाना, नए वृक्ष लगाना और पैदल चलने के सुरक्षित रास्ते बनाना भी आवश्यक है। स्वच्छ हवा विलासिता नहीं, स्वस्थ जीवन की बुनियादी जरूरत है।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर शहर के प्रदूषित वातावरण का सजीव चित्र प्रस्तुत करके उसके कारणों, मानवीय प्रभावों और सुधार के उपायों को क्रम से सामने रखता है।

त्वरित सुझाव: इस फ़ीचर में धुएँ से घिरी सुबह का दृश्य देकर शुरुआत करें; फिर कारण, स्वास्थ्य पर प्रभाव और साफ हवा लौटाने के उपायों को छोटे अनुच्छेदों में रखें।

7(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ ॥
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ ॥

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और रचना का परिचय देकर प्रसंग, पंक्तियों का भाव तथा काव्य-सौंदर्य स्पष्ट किया जाता है।
- तुलसीदास की रामभक्ति उन्हें लोकनिंदा, जातिगत पहचान और सांसारिक लेन-देन से ऊपर उठकर स्वाभिमानपूर्वक जीने की शक्ति देती है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग बताइए प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास की रचना 'कवितावली' से लिया गया है। इसमें कवि अपने प्रति समाज की निंदा तथा जाति-संबंधी संकीर्ण धारणाओं के प्रति निर्भीक उपेक्षा व्यक्त करते हैं। वे स्वयं को राम का सेवक मानते हुए बताते हैं कि उनकी पहचान और जीवन का आधार रामभक्ति है, दूसरों द्वारा दिए गए सामाजिक विशेषण नहीं।

चरण 2: लोकनिंदा और जातिगत बंधनों के प्रति दृष्टि समझाइए तुलसीदास कहते हैं कि कोई उन्हें धूर्त कहे, कोई अवधूत अर्थात विरक्त साधु कहे, कोई राजपूत अथवा जुलाहा कहे, उन्हें इन संबोधनों की चिंता नहीं है। समाज मनुष्य को विभिन्न जातियों और श्रेणियों में रखकर उसका मूल्य निर्धारित करता है, किंतु कवि इन आरोपित पहचानों से अपने को मुक्त मानते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना है, इसलिए लोगों को उनसे अपनी जाति बिगड़ने की आशंका भी नहीं करनी चाहिए। इस कथन में जाति की शुद्धता का अहंकार रखने वालों पर व्यंग्य है। कवि का उद्देश्य किसी जाति को नीचा दिखाना नहीं, बल्कि जातिगत संकीर्णता से अपनी निर्लिप्तता जताना है।

चरण 3: रामभक्ति और संतोषपूर्ण जीवन का भाव स्पष्ट कीजिए कवि की प्रसिद्ध पहचान राम के दास की है। इसलिए जिसे जो अच्छा लगे, वह उनके विषय में कह सकता है; उससे उनकी भक्ति और आत्मविश्वास नहीं डिगेंगे। वे माँगकर भोजन करने और मसजिद में सो जाने तक को तैयार हैं। उन्हें विलासपूर्ण भोजन या किसी विशेष निवास की लालसा नहीं है। मसजिद में सोने की बात धार्मिक संकीर्णता से मुक्त उनकी सहज दृष्टि भी प्रकट करती है। 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' का आशय है कि उन्हें किसी से लेन-देन का संबंध नहीं रखना, न किसी सांसारिक उपकार या ऋण के बंधन में पड़ना है। न्यूनतम आवश्यकताओं और ईश्वर के आश्रय से उनका जीवन संतुष्ट है।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य पहचानिए पद में ब्रजभाषा का सहज और प्रभावशाली प्रयोग है। 'धूत कहौ, अवधूत कहौ' में संबोधनों और 'कहौ' की आवृत्ति कवि की निर्भीकता को उभारती है। जातिगत अभिमान पर व्यंग्य और 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' जैसा मुहावरेदार कथन भाषा को सजीव बनाते हैं। राम के प्रति समर्पण, सामाजिक रूढ़ियों की उपेक्षा तथा संत की फक्कड़ वृत्ति इस पद का प्रमुख सौंदर्य हैं।

चरण 5: निष्कर्ष तुलसीदास रामदास होने को अपनी वास्तविक पहचान मानते हैं। रामभक्ति, संतोष और निर्लिप्तता के बल पर वे लोकनिंदा तथा जातिगत अभिमान से अप्रभावित रहकर स्वाभिमानपूर्ण जीवन का आदर्श रखते हैं।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में चार सूत्र जोड़िए: लोकनिंदा की उपेक्षा, जातिगत संकीर्णता पर व्यंग्य, राम के प्रति समर्पण और लेन-देन से मुक्त संतोषपूर्ण जीवन।

7(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया —
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया —
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि, कविता और प्रसंग के साथ पंक्तियों के प्रत्यक्ष तथा प्रतीकात्मक अर्थ स्पष्ट किए जाते हैं।
- 'बादल राग' में बादल सामाजिक क्रांति का और धरती में सोए अंकुर शोषित जनों की जागती आशाओं का प्रतीक हैं।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत कीजिए प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता 'बादल राग' से लिया गया है। कवि बादल को क्रांति और नवजीवन के दूत के रूप में संबोधित करते हैं। इस प्रसंग में बादल की गर्जना धरती में सोए अंकुरों को जगाती है। इसी प्राकृतिक दृश्य के माध्यम से कवि पीड़ित जनों में परिवर्तन की चेतना और नए जीवन की आशा जागने का चित्र प्रस्तुत करते हैं।

चरण 2: बादल की रण-नौका का बिंब समझाइए कवि के अनुसार बादल की रण-तरी अर्थात युद्ध की नौका वायु के सागर में तैर रही है। हवा से भरे आकाश को सागर और बादल को उसमें तैरती नौका के रूप में देखा गया है। उसकी छाया अस्थिर सुख पर दुख की छाया के समान दिखाई देती है। यहाँ सुख की क्षणभंगुरता का संकेत है। साथ ही क्रांति की आहट सुख-सुविधा में डूबे वर्ग को भयभीत करती है, क्योंकि उससे उसकी व्यवस्था बदल सकती है। संसार का हृदय दुख और शोषण से झुलसा हुआ है। उस पर क्रांति का व्यापक प्रभाव छा रहा है। 'निर्दय विप्लव' पुरानी अन्यायपूर्ण व्यवस्था को तोड़ने वाले परिवर्तन की कठोर शक्ति का बोध कराता है।

चरण 3: जागते अंकुरों की आशा का भाव खोलिए बादल की यह युद्ध-नौका अनेक आकांक्षाओं से भरी है। उसकी गर्जना युद्ध की भेरी के समान सुनाई देती है। गर्जन से पृथ्वी के हृदय में सोए हुए बीज-अंकुर सजग हो उठते हैं और नए जीवन की आशा में सिर उठाकर बादल की ओर देखते हैं। प्रत्यक्ष अर्थ में वर्षा अंकुरों के विकास और जीवन का आधार है। प्रतीकात्मक अर्थ में शोषित और उपेक्षित लोग इन अंकुरों के समान हैं। क्रांति का आह्वान उन्हें निष्क्रियता से जगाता है तथा वे उससे मुक्ति, विकास और बेहतर भविष्य की आशा करते हैं। इसलिए बादल का प्रचंड रूप उनके लिए केवल विनाशकारी नहीं, नई सृष्टि का आश्वासन भी है।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य का विवेचन कीजिए कविता में प्रकृति का मानवीकरण और प्रतीकात्मक चित्रण हुआ है। अंकुरों का सजग होना, सिर ऊँचा करना और आशा से देखना उन्हें मानवीय संवेदना प्रदान करता है। 'समीर-सागर' तथा बादल की 'रण-तरी' में रूपक का सौंदर्य है। 'भेरी-गर्जन' का ध्वनि-बिंब क्रांति के आह्वान को प्रभावशाली बनाता है। बादल और अंकुर के प्रतीकों से सामाजिक परिवर्तन की भावना व्यक्त होती है। मुक्त छंद की लय और ओजपूर्ण भाषा बादल की गति, शक्ति तथा जन-आकांक्षा को जीवंत करते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष कवि ने बादल को ऐसी क्रांतिकारी शक्ति माना है जो जड़ और अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलकर पीड़ित जनों में नए जीवन की आशा जगाती है। उसकी गर्जना से अंकुरों का जागना जनचेतना के जागरण का सजीव प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: पहले बादल, गर्जन और अंकुर का प्राकृतिक अर्थ लिखिए; फिर उन्हें क्रमशः क्रांति, उसके आह्वान और आशावान शोषित जनता से जोड़कर व्याख्या पूरी कीजिए।

7(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ ! [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में कवि और कविता का परिचय देकर पंक्तियों का भाव स्पष्ट किया जाता है तथा उनके काव्य-सौन्दर्य का उल्लेख किया जाता है।
- इन पंक्तियों में यौवन के उल्लास और प्रिय की स्मृति से उत्पन्न विरह-वेदना का एक साथ अनुभव हो रहा है। बाहरी हँसी के पीछे भीतरी दुःख छिपा है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियाँ हरिवंश राय बच्चन की कविता 'आत्म-परिचय' से ली गई हैं। कवि अपने व्यक्तित्व और जीवनानुभवों का परिचय देते हुए बताता है कि उसके भीतर प्रेम, मस्ती और पीड़ा एक साथ विद्यमान हैं। इस अंश में यौवन की उमंग के साथ जुड़ी उदासी तथा किसी प्रिय की याद से उत्पन्न विरोधी मनःस्थितियों का चित्रण है।

चरण 2: यौवन के उन्माद और अवसाद की व्याख्या कवि कहता है कि वह यौवन का उन्माद लेकर चलता है। यहाँ उन्माद से आशय युवावस्था के जोश, मस्ती और भावनात्मक आवेग से है। उसके भीतर जीने का उत्साह है, किन्तु यह उत्साह दुःख से सर्वथा मुक्त नहीं है। 'उन्मादों में अवसाद' कहकर वह स्पष्ट करता है कि उसकी उमंगों में उदासी भी समाई हुई है। प्रेम से मिलने वाली प्रसन्नता और विरह की वेदना उसके जीवन में साथ-साथ उपस्थित हैं। इसलिए उसके व्यक्तित्व को केवल उसकी मस्ती देखकर नहीं समझा जा सकता।

चरण 3: प्रिय की स्मृति और भीतरी वेदना कवि किसी प्रिय की स्मृति सँजोए हुए है। वह स्मृति बाहर से उसे हँसाती है, पर भीतर ही भीतर रुलाती भी है। प्रिय के साथ जुड़े मधुर अनुभव प्रसन्नता जगाते हैं, जबकि उसकी याद में अनुभव होने वाला अभाव मन को पीड़ित करता है। इस प्रकार बाहर दिखाई देने वाला उल्लास हृदय की पूरी स्थिति नहीं बताता। 'हाय' शब्द उसके मन की कसक और व्याकुलता को प्रकट करता है। कवि यहाँ किसी विशेष व्यक्ति का नाम नहीं देता; अतः व्याख्या में प्रिय की अनिर्दिष्ट स्मृति ही अभिप्रेत है।

चरण 4: काव्य-सौन्दर्य सरल, प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली में कवि ने गहरी भावनात्मक अनुभूति व्यक्त की है। 'उन्माद' और 'अवसाद' तथा बाहर हँसने और भीतर रोने में विरोधी भावों का सह-अस्तित्व विरोधाभास का सौन्दर्य उत्पन्न करता है। 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति आत्मकथन को लय और प्रभाव देती है। हँसने-रोने का द्वंद्व प्रेम की जटिल अनुभूति को मूर्त करता है तथा 'हाय' विरह की तीव्रता को बढ़ाता है।

चरण 5: निष्कर्ष इन पंक्तियों में कवि का प्रेममय और संवेदनशील व्यक्तित्व प्रकट हुआ है। यौवन की मस्ती के बीच प्रिय की याद से उपजा अवसाद तथा बाहरी हँसी के पीछे छिपी भीतरी पीड़ा इनका केंद्रीय भाव है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में पहले कवि-कविता का नाम दें, फिर उन्माद-अवसाद और बाहर-भीतर के द्वंद्व को प्रिय की याद से जोड़कर समझाएँ।

8. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर भीतर
इस घर, उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने ? [6 अंक]

8(क). काव्यांश के कथ्य के सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथ्य-सौन्दर्य का अर्थ कविता में व्यक्त विचार या भाव की विशेषता स्पष्ट करना है।
- यहाँ चिड़िया की सीमित उड़ान के माध्यम से कविता की कल्पना और अनुभूति की असीम व्यापकता व्यक्त हुई है।

चरण 1: उड़ान की तुलना का आशय काव्यांश में कविता को उड़ान बताया गया है। चिड़िया की उड़ान स्थान, शरीर और शक्ति की सीमाओं में बँधी होती है। कविता की उड़ान कल्पना और संवेदना की उड़ान है; इसलिए वह चिड़िया की वास्तविक उड़ान से अधिक व्यापक है। चिड़िया को आधार बनाकर कवि ने रचना की इस विशेषता को सहज रूप में समझाया है।

चरण 2: भीतर-बाहर और घरों के पार विस्तार 'बाहर भीतर' से कविता की पहुँच बाहरी संसार और मन के भीतरी भावलोक तक दिखाई देती है। 'इस घर, उस घर' उसकी व्यापक मानवीय पहुँच बताता है। कविता अलग-अलग घरों और लोगों के अनुभवों से जुड़ सकती है। इस प्रकार परिचित चिड़िया और घरों के चित्रों द्वारा कविता की सीमाओं से मुक्त कल्पना तथा मनुष्यों को जोड़ने की क्षमता व्यक्त करना कथ्य का सौन्दर्य है।

चरण 3: निष्कर्ष कथ्य का सौन्दर्य कविता की असीम कल्पनात्मक उड़ान और व्यापक मानवीय संवेदना में है, जो बाहरी संसार, भीतरी मन और विभिन्न घरों तक पहुँचती है।

त्वरित सुझाव: कथ्य पूछे जाने पर अलंकारों की सूची देने के स्थान पर उड़ान, भीतर-बाहर और घरों के पार पहुँचने का भाव स्पष्ट करें।

8(ख). इन पंक्तियों की भाषागत विशेषताओं की चर्चा कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषागत विशेषताओं में शब्दावली, लय, बिंब और अलंकार का उल्लेख पंक्तियों के प्रमाण के साथ करना चाहिए।
- इन पंक्तियों में सहज खड़ी बोली और परिचित चिड़िया का बिंब कविता की व्यापक शक्ति को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: भाषा और अभिव्यक्ति पंक्तियों की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और बोलचाल के निकट खड़ी बोली है। 'चिड़िया', 'पंख', 'घर' जैसे सामान्य शब्द अमूर्त कल्पना को मूर्त बनाते हैं। 'चिड़िया क्या जाने' की प्रश्नात्मक शैली कविता की विशिष्ट उड़ान को प्रभावपूर्ण बनाती है। कवि इस प्रश्न द्वारा शंका नहीं रखता, बल्कि कविता की असीम पहुँच पर बल देता है।

चरण 2: बिंब, अलंकार और लय 'कविता एक उड़ान है' में कविता पर उड़ान का आरोप होने से रूपक है। 'कविता के पंख' भी कल्पना की शक्ति का बिंब प्रस्तुत करता है। 'बाहर भीतर' और 'इस घर, उस घर' छोटे, संतुलित पद हैं, जो कविता की व्यापकता को सघन रूप देते हैं। 'चिड़िया क्या जाने' की आवृत्ति और छोटी-बड़ी मुक्तछंद की पंक्तियाँ स्वाभाविक लय तथा कथन में बल उत्पन्न करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सरल खड़ी बोली, प्रश्नात्मक शैली, उड़ान-पंख का रूपकात्मक बिंब, आवृत्ति और मुक्तछंद की सहज लय इन पंक्तियों की प्रमुख भाषागत विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: हर भाषागत विशेषता के साथ इसी काव्यांश का छोटा उदाहरण दें; रूपक बताते समय कविता और उड़ान का संबंध स्पष्ट करें।

8(ग). 'कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने' पंक्ति के भावगत सौन्दर्य पर अपने विचार प्रकट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावगत सौन्दर्य में पंक्ति का निहित भाव और उसकी प्रभावशीलता स्पष्ट की जाती है।
- चिड़िया की उड़ान और कविता की उड़ान में भौतिक सीमा तथा कल्पना की असीमता का अंतर है।

चरण 1: चिड़िया और कविता की उड़ान का अंतर चिड़िया वास्तविक आकाश में उड़ती है, इसलिए उसकी उड़ान उसके शरीर, शक्ति और स्थान की सीमाओं में रहती है। कविता की उड़ान मनुष्य की कल्पना और अनुभूति से संभव होती है। वह मन के भीतर के भावों और बाहर की दुनिया, दोनों तक पहुँच सकती है। इसी कारण चिड़िया कविता की उड़ान के पूरे अर्थ को नहीं जान सकती।

चरण 2: प्रश्न में निहित व्यापक भाव 'भला चिड़िया क्या जाने' कहकर कवि कविता की सीमाहीन सृजनात्मक शक्ति का संकेत करता है। यह चिड़िया का तिरस्कार नहीं, बल्कि उसकी परिचित उड़ान के सहारे कविता की असाधारण पहुँच का बोध है। अगले पदों के 'बाहर भीतर' और 'इस घर, उस घर' इस पहुँच को स्पष्ट करते हैं। मनुष्य के अनेक अनुभवों को जोड़ने वाली कल्पना को एक सहज प्रश्न के माध्यम से व्यक्त करना पंक्ति का भावगत सौन्दर्य है।

चरण 3: निष्कर्ष पंक्ति का सौन्दर्य इस भाव में है कि कविता की कल्पना और संवेदना की उड़ान चिड़िया की भौतिक उड़ान से कहीं व्यापक है; वह मन तथा संसार की सीमाओं के पार पहुँचती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल कविता को महान न कहें; चिड़िया की भौतिक उड़ान और कविता की कल्पनात्मक उड़ान का अंतर समझाएँ।

अथवा

8. जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के ख़तरनाक किनारों तक —
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत । [6 अंक]

8(क). "जन्म ..... कपास" पंक्ति में कपास से बच्चों का क्या सम्बन्ध है ? स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य में वस्तु के गुणों द्वारा किसी भाव या स्वभाव को व्यक्त किया जा सकता है। यहाँ कपास के गुण बच्चों से जोड़े गए हैं।
- कपास का हलकापन और कोमलता बच्चों की सहज कोमलता, फुर्ती तथा निर्भार गति का संकेत करते हैं।

चरण 1: कपास का सांकेतिक अर्थ 'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' का अर्थ यह नहीं है कि बच्चे सचमुच कपास लेकर पैदा होते हैं। कपास अत्यंत हलकी और मुलायम होती है। कवि इन गुणों के माध्यम से बच्चों के शरीर की कोमलता और उनके स्वभाव के सहज हलकेपन को सामने लाता है। इस कथन को शाब्दिक अर्थ में लेने पर उसका काव्यगत आशय छूट जाएगा।

चरण 2: बच्चों की गति से संबंध कपास जैसे हलकेपन का भाव आगे बच्चों के बेसुध दौड़ने, पेंग भरने और डाल जैसी लचीली गति से

जुड़ता है। बालसुलभ उत्साह में वे अपने शरीर का बोझ महसूस किए बिना फुर्ती से दौड़ते हैं। उनकी कोमलता और सहज उल्लास कपास के बिंब में एक साथ प्रकट होते हैं। 'जन्म से ही' यह बताता है कि ये गुण उनके बाल-स्वभाव का स्वाभाविक अंग हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कपास बच्चों की जन्मजात कोमलता और हलकेपन का प्रतीक है। इसके द्वारा कवि उनके निर्भार, फुर्तीले और उत्साहपूर्ण बाल-स्वभाव को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: कपास का अर्थ किसी वास्तविक वस्तु के रूप में न लें; उसके हलकेपन और कोमलता को बच्चों की गति तथा स्वभाव से जोड़ें।

8(ख). "छतों को भी नरम बनाते हुए" — काव्य-पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का अर्थ संदर्भ और अनुभूति से समझना चाहिए; यहाँ कठोर छत के सचमुच मुलायम हो जाने का वर्णन नहीं है।
- बच्चों की कोमल, हलकी और लचीली गति उनके उत्साहपूर्ण खेल को व्यक्त करती है।

चरण 1: पंक्ति का संदर्भगत अर्थ बच्चे पतंग उड़ाने के उत्साह में छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं। उनके हलके और कोमल पैरों की गति ऐसी है मानो कठोर छतें भी उनके स्पर्श से नरम हो रही हों। कवि ने बच्चों की फुर्ती और कोमलता को उभारने के लिए छत की कठोरता के साथ यह कल्पनात्मक संबंध बनाया है।

चरण 2: बालसुलभ उत्साह का प्रभाव खेल में तल्लीन बच्चों को छत की कठोरता और दौड़ने की कठिनाई का ध्यान नहीं रहता। उनकी लचीली गति और रोमांच पूरे दृश्य को सहज तथा उल्लासपूर्ण बना देते हैं। 'छतों को भी नरम' कहना इसी अनुभूति की प्रभावशाली अभिव्यक्ति है। आगे आया 'डाल की तरह लचीले वेग' का चित्र भी बताता है कि मुख्य बल बच्चों की गति और शरीर के लोच पर है, छत के वास्तविक परिवर्तन पर नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में बच्चों के हलके, कोमल और उत्साहपूर्ण दौड़ने का चित्र है; उनकी सहज गति से कठोर छतें भी मानो नरम अनुभव होती हैं।

त्वरित सुझाव: छत के सचमुच नरम होने की बात न लिखें; 'मानो' का प्रयोग करके बच्चों के कोमल पैरों, लचीली गति और तल्लीनता का भाव समझाएँ।

8(ग). छतों के ख़तरनाक किनारों से वे कैसे बच पाते हैं ? इस संदर्भ में "डाल की तरह लचीला वेग" कथन का सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बच्चों का उत्साह, शारीरिक लचीलापन और सहज संतुलन उनकी निर्भय क्रीड़ा का आधार हैं।
- उपमा में किसी गुण की समानता दिखाई जाती है; यहाँ बच्चों की गति की तुलना लचीली डाल से हुई है।

चरण 1: बचाव का आधार पहचानिए कवि कहता है कि छतों के ख़तरनाक किनारों तक पहुँचने पर बच्चों को उनके रोमांचित शरीर का संगीत बचाता है। इसका आशय उनके शरीर की स्फूर्ति, गति की लय और सहज संतुलन से है। खेल में तन्मय रहते हुए भी उनका लचीला शरीर मुड़कर और सँभलकर गिरने से बच जाता है। यहाँ संगीत किसी बाहर बजते वाद्य का नहीं, उनके अंगों की तालमेलपूर्ण गति का बिम्ब है।

चरण 2: लचीली डाल की उपमा समझिए डाल हवा के वेग से झुकती और फिर सँभलती है। इसी प्रकार बच्चों की गति तेज़ होने के साथ लचीली है; वे दौड़ते और पेंग भरते हुए अपने शरीर को साध लेते हैं। इस उपमा से उनकी कोमलता, चपलता और गति का सजीव चित्र बनता है। इससे भय के स्थान पर बाल-मन की उमंग तथा शरीर की स्वाभाविक लय उभरती है।

चरण 3: निष्कर्ष बच्चों को उनका सहज शारीरिक संतुलन और रोमांचपूर्ण स्फूर्ति बचाती है। लचीली डाल की उपमा उनकी तेज़, लोचयुक्त और लयपूर्ण गति को दृश्य रूप देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के पहले भाग में शरीर के संगीत का अर्थ खोलें और दूसरे भाग में डाल तथा बाल-गति का समान गुण बताएँ।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'सहर्ष स्वीकारा है' कविता किसको व क्यों स्वीकारने की प्रेरणा देती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता जीवन के सुख-दुःख और व्यक्तित्व को गढ़ने वाले अनुभवों की सहर्ष स्वीकृति का भाव व्यक्त करती है।
- स्वीकृति के पीछे प्रिय का आत्मीय प्रभाव और उससे जुड़ी स्मृतियों के प्रति कृतज्ञता है।

चरण 1: स्वीकार्य अनुभवों को पहचानिए कविता मनुष्य को अपने जीवन की उपलब्धियों और अभावों, सुखों और पीड़ाओं, सफलताओं और संघर्षों को स्वीकारने की प्रेरणा देती है। कवि अपनी गरबीली गरीबी, गंभीर अनुभव, विचारों और अंतर्मन की संवेदनाओं को अपना मानता है। वह केवल अनुकूल परिस्थितियों को चुनकर प्रतिकूल अनुभवों को जीवन से अलग नहीं करता; दोनों मिलकर उसके व्यक्तित्व और जीवनानुभूति को निर्मित करते हैं।

चरण 2: स्वीकारने का कारण समझिए कवि इन अनुभवों को इसलिए सहर्ष स्वीकारता है कि उन सबमें उसे अपने प्रिय का प्रभाव और अपनापन दिखाई देता है। प्रिय से जुड़कर अभाव और पीड़ा भी अर्थपूर्ण हो जाते हैं। इस आत्मीय संबंध के कारण अनुभव बोझ मात्र नहीं रहते, बल्कि जीवन की अमूल्य धरोहर बनते हैं। कविता जीवन को उसकी समग्रता में अपनाने और उसे आकार देने वाले संबंध के प्रति कृतज्ञ रहने की प्रेरणा देती है।

चरण 3: निष्कर्ष कविता जीवन के समस्त सुख-दुःख, अभाव और अनुभवों को सहर्ष स्वीकारने की प्रेरणा देती है, क्योंकि उनसे व्यक्तित्व बनता है और कवि उनमें प्रिय की आत्मीय देन देखता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के किसको और क्यों, दोनों का उत्तर दें: पहले जीवन के अनुभव लिखें, फिर प्रिय से उनके संबंध को स्पष्ट करें।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप' काव्यांश के आधार पर भ्रातृशोक में विह्वल राम की दशा को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम का विलाप उनके गहरे भ्रातृप्रेम और मानवीय करुणा को प्रकट करता है।
- राम की दशा समझाते समय उनकी व्याकुलता, आत्मग्लानि और लक्ष्मण के बिना जीवन की असहायता पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 1: विलाप की स्थिति स्पष्ट कीजिए लक्ष्मण को मूर्छित देखकर राम अत्यंत शोकाकुल हो जाते हैं। वे उनके पूर्व स्नेह और समर्पण को याद करके उन्हें उठने के लिए पुकारते हैं। लक्ष्मण ने राम के लिए माता-पिता और सुख-सुविधाएँ छोड़कर वन के कष्ट सहे थे। उनकी वर्तमान निश्चेष्टता राम को असह्य लगती है। भाई के प्रति चिंता में उनका धैर्य टूट जाता है और वे सामान्य मनुष्य की तरह विलाप करने लगते हैं।

चरण 2: आत्मग्लानि और असहायता समझिए राम को लगता है कि उनके कारण ही लक्ष्मण इस संकट में पड़े हैं। वे कहते हैं कि यदि वन में भाई का वियोग होना जानते तो पिता की आज्ञा भी न मानते। लक्ष्मण के बिना उन्हें अपना जीवन पंखहीन पक्षी के समान असमर्थ लगता है। वे यह सोचकर भी व्याकुल हैं कि अयोध्या लौटकर सुमित्रा को क्या उत्तर देंगे। इस प्रकार उनका शोक प्रेम, पश्चात्ताप और भविष्य की चिंता से गहरा होता है।

चरण 3: निष्कर्ष भ्रातृशोक में राम धैर्य खोकर व्याकुल विलाप करते हैं। लक्ष्मण का समर्पण याद करके वे स्वयं को दोषी मानते हैं और उनके बिना जीवन असहाय तथा निरर्थक अनुभव करते हैं।

त्वरित सुझाव: राम की दशा लिखते समय केवल दुःखी न कहें; उनके विलाप, आत्मग्लानि और सुमित्रा को उत्तर देने की चिंता से उसे पुष्ट करें।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'छोटा मेरा खेत' कविता में छोटे चौकोने खेत को 'काग़ज़ का पन्ना' क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में खेती के माध्यम से कविता रचने की प्रक्रिया को समझाया गया है; खेत और काग़ज़ का पन्ना इसी रूपक के अंग हैं।
- खेत में अन्न उपजता है और काग़ज़ पर शब्दों के माध्यम से भाव, कल्पना तथा काव्य-रस का सृजन होता है।

चरण 1: खेत और पन्ने की समानता बताइए काग़ज़ का पन्ना आकार में छोटा और चौकोर होता है। कवि इसी सीमित पन्ने पर रचना करता है, जैसे किसान अपने खेत में फसल उगाता है। इसलिए पन्ना कवि की सृजन-भूमि है। छोटे खेत की संज्ञा केवल आकार की समानता के कारण नहीं है; इसका प्रमुख आधार दोनों का नया उत्पादन करना है। किसान का श्रम अन्न देता है और कवि की संवेदना शब्दों में व्यक्त होकर कविता बनती है।

चरण 2: काव्य-फसल की प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए कवि के मन में आया भाव बीज की तरह है। कल्पना और विचार के सहारे उसका विकास होता है और शब्दों के अंकुर फूटते हैं। अंततः पन्ने पर पूरी कविता आकार लेती है। उसकी रसपूर्ण अनुभूति पाठकों को बार-बार आनंद देती है। इस प्रकार छोटा पन्ना भावों की व्यापक दुनिया समेट लेता है; सीमित आकार के भीतर अनंत आस्वाद देने वाली काव्य-फसल तैयार होती है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटा चौकोना खेत काग़ज़ के पन्ने का रूपक है, क्योंकि उसी पर कवि भावों के बीज बोकर कल्पना और शब्दों से कविता की रसपूर्ण फसल उगाता है।

त्वरित सुझाव: समानता को केवल चौकोरे आकार तक सीमित न रखें; खेत से अन्न और पन्ने से कविता की उत्पत्ति का संबंध अवश्य दिखाएँ।

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बाज़ार में एक जादू है । वह जादू आँख की राह काम करता है । वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है । जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर ख़ूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा । मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा । कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है । मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ । सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है । पर यह सब जादू का असर है । जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फ़ैंसी चीज़ों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि ख़लल ही डालती है । [8 अंक]

10(i). बाज़ार के जादू को 'रूप का जादू' क्यों कहा गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में बाज़ार का जादू वस्तुओं के बाहरी सौन्दर्य और आकर्षक रूप के प्रभाव का प्रतीक है।
- उत्तर का आधार लेखक का कथन है कि बाज़ार का जादू आँख की राह काम करता है।

चरण 1: रूप के प्रभाव को समझिए बाज़ार की वस्तुएँ अपने सुंदर रूप, रंग और आकर्षक सजावट से देखने वाले का ध्यान खींचती हैं। यह प्रभाव सबसे पहले आँखों के माध्यम से मन तक पहुँचता है। वस्तु को देखकर व्यक्ति प्रभावित होता है और उसे पाने की इच्छा करने

लगता है। इसीलिए लेखक इसे रूप का जादू कहता है। जादू का अर्थ यहाँ कोई अलौकिक घटना नहीं, बल्कि ऐसा आकर्षण है जो निर्णय पर हावी हो जाए।

चरण 2: आकर्षण और आवश्यकता में अंतर कीजिए इस दृश्य आकर्षण के कारण व्यक्ति को अनेक सामान आवश्यक और आराम बढ़ाने वाले लगने लगते हैं। वह अपनी वास्तविक ज़रूरत पर विचार करने के बजाय यह भी लूँ, वह भी लूँ की मन:स्थिति में पहुँच जाता है। गद्यांश बताता है कि आकर्षण उतरने पर फ़ैंसी चीज़ों की अधिकता असुविधा पैदा करती दिखाई देती है। इससे स्पष्ट है कि तत्काल इच्छा का कारण उनका मोहक रूप था, उनकी वास्तविक उपयोगिता नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू रूप का जादू है, क्योंकि वस्तुओं का आकर्षक बाहरी रूप आँखों के रास्ते मन को लुभाकर अनावश्यक वस्तुएँ लेने की इच्छा जगा देता है।

त्वरित सुझाव: आँख, रूप और इच्छा का क्रम पकड़ें; इसी से दृश्य आकर्षण तथा वास्तविक उपयोगिता का अंतर स्पष्ट हो जाएगा।

10(ii). 'जेब भरी हो और मन खाली हो' का आशय स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जेब भरी होना खरीदने के लिए पर्याप्त धन होने का संकेत है।
- मन खाली होना अपनी वास्तविक आवश्यकता के प्रति स्पष्टता और संतोष न होने की अवस्था है।

चरण 1: दोनों पदों का आशय खोलिए जेब भरी हो का अर्थ है कि व्यक्ति के पास वस्तुएँ खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा है। मन खाली हो का अर्थ है कि उसके मन में यह निश्चित नहीं है कि उसे वास्तव में क्या चाहिए। उसकी इच्छाओं को आवश्यकता और संतोष की स्पष्ट दिशा नहीं मिली है। इसलिए मन खाली होने का अर्थ केवल उदासी या बुद्धिहीनता नहीं लिया जाना चाहिए; प्रसंग में यह बाज़ार के आकर्षण को रोकने वाले विवेक और उद्देश्य की कमी है।

चरण 2: संयुक्त स्थिति का प्रभाव समझिए जब धन उपलब्ध हो और ज़रूरत का निश्चय न हो, तब बाज़ार की अनेक वस्तुओं का निमंत्रण मन तक पहुँच जाता है। व्यक्ति को हर आकर्षक चीज़ आवश्यक तथा आराम बढ़ाने वाली लगती है। पर्याप्त धन होने से वह अपनी उठती इच्छाओं पर तुरंत अमल भी कर सकता है। इसलिए ऐसी स्थिति में बाज़ार का जादू अधिक चलता है और व्यक्ति अपनी आवश्यकता से अधिक सामान खरीद लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन का आशय है कि व्यक्ति के पास पैसा तो पर्याप्त हो, किंतु खरीद की वास्तविक आवश्यकता और संतोष का बोध न हो; तब वह बाज़ार के आकर्षण में आसानी से फँस जाता है।

त्वरित सुझाव: जेब को आर्थिक सामर्थ्य और मन को आवश्यकता के निश्चय से जोड़कर समझाएँ; दोनों के एक साथ होने का परिणाम भी लिखें।

10(iii). बाज़ार का जादू किस तरह के व्यक्तियों पर अधिक असर करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का प्रभाव व्यक्ति की मानसिक अवस्था पर निर्भर करता है; खाली मन उसकी अनेक वस्तुओं से आसानी से प्रभावित होता है।
- भरी जेब उस प्रभाव को अधिक बल देती है, क्योंकि इच्छा होने पर वस्तुएँ तुरंत खरीदी जा सकती हैं।

चरण 1: प्रभावित होने वाले व्यक्तियों की पहचान कीजिए बाज़ार का जादू उन व्यक्तियों पर अधिक चलता है जिनके मन में अपनी आवश्यकता का स्पष्ट निश्चय और संतोष नहीं होता। ऐसे लोग वस्तुओं को अपनी ज़रूरत की कसौटी पर परखने के बजाय उनके आकर्षक रूप से प्रभावित होते हैं। उनका खाली मन तरह-तरह की चीज़ों का निमंत्रण स्वीकार करता है। फलतः हर नया सामान उन्हें आवश्यक और जीवन में आराम जोड़ने वाला दिखाई देने लगता है।

चरण 2: धन की भूमिका स्पष्ट कीजिए इन व्यक्तियों की जेब भी भरी हो तो जादू का असर और बढ़ता है। उनके पास खरीदने का साधन रहता है, इसलिए यह भी लूँ, वह भी लूँ की इच्छा को रोकना कठिन हो जाता है। फिर भी गद्यांश के अनुसार केवल अमीर होना इसका आधार नहीं है; जेब खाली होने पर भी मन खाली हो तो आकर्षण पैदा हो सकता है। मुख्य कारण आवश्यकताओं के प्रति अस्पष्ट और असंतुष्ट मन है, जबकि धन खरीदारी की संभावना बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू खाली, असंतुष्ट और अपनी आवश्यकताओं के प्रति अनिश्चित मन वाले व्यक्तियों पर अधिक चलता है; उनकी जेब भरी हो तो उसका असर विशेष रूप से बढ़ जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मुख्य कारण खाली मन लिखें; भरी जेब को असर बढ़ाने वाली स्थिति बताएँ, एकमात्र कारण नहीं।

10(iv). जादू का असर उतर जाने पर व्यक्ति को क्या अहसास होने लगता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न आकर्षक वस्तुओं की अधिकता और वास्तविक सुविधा के अंतर की समझ जाँचता है।
- बाज़ार का आकर्षण तत्काल इच्छा पैदा करता है; आकर्षण समाप्त होने पर वस्तु की वास्तविक उपयोगिता स्पष्ट होती है।

चरण 1: आकर्षण के समय की मन:स्थिति गद्यांश में बाज़ार के रूप को जादू कहा गया है। उसके प्रभाव में व्यक्ति को हर वस्तु आवश्यक तथा आराम बढ़ाने वाली लगती है। वह यह भी लूँ और वह भी लूँ की इच्छा से भर जाता है। इस स्थिति में वह अपनी वास्तविक आवश्यकता और केवल दिखावे के आकर्षण में अंतर नहीं कर पाता।

चरण 2: आकर्षण उतरने पर होने वाला बोध जादू का प्रभाव समाप्त होने पर व्यक्ति समझता है कि फ़ैंसी वस्तुओं का अधिक होना सुख और सुविधा की गारंटी नहीं है। उसने जिन वस्तुओं को आराम बढ़ाने वाला समझा था, उनकी बहुतायत उलटे आराम में बाधा डालती है। गद्यांश का वाक्य है कि ऐसी चीज़ों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि ख़लल डालती है। इसलिए उत्तर का केंद्र अनावश्यक वस्तु-संचय की अनुपयोगिता है।

चरण 3: निष्कर्ष जादू उतरने पर व्यक्ति को अहसास होता है कि फ़ैंसी चीज़ों की बहुतायत आराम नहीं बढ़ाती, बल्कि उसमें बाधा डालती है। जिन्हें वह ज़रूरी समझ रहा था, वे उसकी वास्तविक जरूरत नहीं थीं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में खरीदारी के समय का भ्रम और बाद में अनुभव होने वाली असुविधा का अंतर स्पष्ट करें।

अथवा

10. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी । पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी । बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था । स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी । अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुख़ार हटाने का कोई गुण था, और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे । [8 अंक]

10(i). गद्यांश में रात्रि की किस विभीषिका की चर्चा की गई है ? ढोलक उसको किस प्रकार की चुनौती देती थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न महामारी से पैदा हुए भय और कला द्वारा मिलने वाले मानसिक साहस का संबंध जाँचता है।
- ढोलक की चुनौती का अर्थ रोग का उपचार नहीं, निराशा और मृत्यु-भय का प्रतिरोध है।

चरण 1: रात्रि की विभीषिका पहचानना गद्यांश में महामारी से पीड़ित गाँव की भयावह रात का उल्लेख है। रोगियों के पास औषधि, उपचार और आवश्यक पथ्य तक नहीं है। वे अर्द्धमृत अवस्था में पड़े हैं और मृत्यु की आशंका वातावरण को डरावना बनाती है। रात्रि की विभीषिका इसी बीमारी, असहायता और मृत्यु-भय से निर्मित स्थिति को कहा गया है।

चरण 2: ढोलक द्वारा दी जाने वाली चुनौती पहलवान संध्या से सुबह तक ढोलक बजाता रहता है। उसकी आवाज़ सुनकर शक्तिहीन लोगों की आँखों के सामने दंगल के दृश्य उभर आते हैं और उनमें उत्साह का संचार होता है। ढोलक भयावह वातावरण में जीवन की सक्रियता का आभास देती है। वह महामारी को रोक नहीं सकती, किंतु लोगों को साहस देकर मृत्यु से डरने की स्थिति से बाहर निकालती है।

चरण 3: निष्कर्ष रात्रि की विभीषिका महामारी, असहाय रोगियों और आसन्न मृत्यु के भय से जुड़ी है। ढोलक अपनी उत्साहवर्धक ध्वनि से उनमें जीवनीशक्ति और साहस भरकर इस भय को चुनौती देती थी।

त्वरित सुझाव: विभीषिका बताते समय महामारी और मृत्यु-भय लिखें; चुनौती बताते समय ढोलक के मानसिक प्रभाव को सामने रखें।

10(ii). किस प्रकार के व्यक्तियों को ढोलक से राहत मिलती थी ? यह राहत कैसी थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न के दो पक्ष हैं: राहत पाने वाले व्यक्तियों की दशा और उस राहत का स्वरूप।
- गद्यांश मानसिक संबल और वास्तविक रोग-निवारण के बीच स्पष्ट अंतर करता है।

चरण 1: राहत पाने वाले व्यक्तियों की दशा ढोलक से गाँव के महामारी-पीड़ित, शक्तिहीन और अर्द्धमृत व्यक्तियों को राहत मिलती थी। इनमें बूढ़े, बच्चे और जवान सभी शामिल थे। वे औषधि, उपचार और पथ्य से वंचित थे। इसलिए उनके पास बीमारी से लड़ने के आवश्यक साधन नहीं थे और वे शारीरिक निर्बलता के साथ भय तथा निराशा भी झेल रहे थे।

चरण 2: राहत का वास्तविक स्वरूप ढोलक की ध्वनि उनके सामने दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी। उससे निष्क्रिय शरीर और निराश मन में ऊर्जा तथा साहस का अनुभव होता था। यह राहत मानसिक और भावनात्मक थी। ढोलक न बुख़ार मिटाती थी और न महामारी रोकती थी; फिर भी उसका संबल पाकर मृत्यु के निकट पहुँचे लोग डरते नहीं थे और अपेक्षाकृत शांत मन से अंत का सामना करते थे।

चरण 3: निष्कर्ष राहत उपचार और पथ्य से वंचित महामारी-पीड़ित बूढ़ों, बच्चों तथा जवानों को मिलती थी। यह रोग मिटाने वाली राहत नहीं, उत्साह, साहस और मृत्यु-भय से मुक्ति देने वाला मानसिक संबल था।

त्वरित सुझाव: पहले बताइए कि राहत किसे मिली, फिर स्पष्ट कीजिए कि उसका प्रभाव मन पर था, बीमारी के उपचार पर नहीं।

10(iii). 'दंगल के दृश्य' से लेखक का क्या अभिप्राय है ? यह दृश्य लोगों पर किस तरह का प्रभाव डालता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दंगल कुश्ती का आयोजन है; उसके दृश्य में शक्ति, संघर्ष और उत्साह का भाव निहित होता है।
- यहाँ वास्तविक दंगल होने की बात नहीं, ढोलक सुनकर रोगियों की कल्पना में दृश्य उभरने की बात है।

चरण 1: दंगल के दृश्य का आशय दंगल के दृश्य से लेखक का अभिप्राय अखाड़े में पहलवानों की कुश्ती और उनके शक्ति-प्रदर्शन के दृश्य से है। ढोलक की आवाज़ सुनते ही बीमारी से निष्क्रिय पड़े गाँववालों की आँखों के आगे ऐसा दृश्य नाचने लगता था। इसलिए यह रोगियों के सामने सचमुच आयोजित कुश्ती नहीं, उनकी स्मृति और कल्पना में उभरता हुआ उत्साहपूर्ण दृश्य है।

चरण 2: लोगों पर दृश्य का प्रभाव कुश्ती का दृश्य पराक्रम और संघर्ष का भाव जगाता था। इससे बूढ़े, बच्चे और जवान अपनी असहायता के बीच भी जीवन-शक्ति का अनुभव करते थे। गद्यांश में स्नायुओं में बिजली दौड़ने का उल्लेख इसी तीव्र स्फूर्ति के लिए है। रोग समाप्त नहीं होता था, पर निराशा कम होती थी और लोगों को मृत्यु का निर्भयतापूर्वक सामना करने का मनोबल मिलता था।

चरण 3: निष्कर्ष दंगल का दृश्य पहलवानों की कुश्ती और बल-प्रदर्शन का दृश्य है। ढोलक से मन में उभरने वाला यह दृश्य शक्तिहीन रोगियों में स्फूर्ति, उत्साह तथा संघर्ष का साहस भर देता था।

त्वरित सुझाव: दंगल का अर्थ बताने के बाद उसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव लिखें; कल्पना में आए दृश्य को वास्तविक आयोजन न बताएँ।

10(iv). ढोलक की आवाज अपने गुण और शक्ति की दृष्टि से कहीं कम प्रभावकारी थी और कहीं अधिक — ऐसा क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न ढोलक की चिकित्सकीय सीमा और उसकी मानसिक शक्ति का तुलनात्मक विवेचन माँगता है।
- कला बीमारी का इलाज न करते हुए भी भय तथा निराशा कम करके व्यक्ति को सहारा दे सकती है।

चरण 1: रोग के उपचार में ढोलक की सीमा ढोलक की आवाज़ में बुख़ार दूर करने वाला कोई औषधीय गुण नहीं था। वह महामारी के फैलाव या उसकी सर्वनाशकारी शक्ति को भी नहीं रोक सकती थी। इस दृष्टि से उसका प्रभाव सीमित था। गद्यांश कहीं यह दावा नहीं करता कि ढोलक सुनने से बीमारी मिट गई या मृत्यु का सिलसिला रुक गया।

चरण 2: मानसिक संबल देने में उसका प्रभाव इसके विपरीत ढोलक की ध्वनि रोगियों में संजीवनी जैसी शक्ति भरती थी। दंगल के दृश्य की कल्पना से निष्क्रिय स्नायुओं में भी स्फूर्ति का अनुभव होता था। जीवन से निराश और मृत्यु के समीप पड़े लोग साहस जुटा पाते थे। वे मृत्यु से डरते नहीं थे और अंत का सामना शांत भाव से करते थे। इसीलिए मनोबल जगाने की दृष्टि से ढोलक अत्यंत प्रभावकारी थी।

चरण 3: निष्कर्ष ढोलक बुख़ार मिटाने और महामारी रोकने में असमर्थ थी, इसलिए उपचार की दृष्टि से कम प्रभावकारी थी। किंतु वह साहस और जीवनीशक्ति भरकर मृत्यु-भय दूर करती थी, इसलिए मानसिक राहत देने में अधिक प्रभावकारी थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो आधारों पर बाँटें: रोग मिटाने की असमर्थता और रोगियों में साहस पैदा करने की क्षमता।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में भक्तिन अपने ग्रामीण संस्कारों, भोजन और रहन-सहन से गहराई से जुड़ी है।
- प्रश्न में अधिक देहाती होने का आशय लेखिका के दैनिक जीवन पर भक्तिन की ग्रामीण आदतों के प्रभाव से है।

चरण 1: भक्तिन के व्यक्तित्व का प्रभाव भक्तिन लेखिका के साथ रहते हुए भी अपने गाँव के संस्कार और अपनी जीवन-पद्धति नहीं छोड़ती। वह अपने ढंग को उचित मानती है और शहरी वातावरण के अनुसार स्वयं को बदलने की अपेक्षा लेखिका के जीवन को अपने अनुकूल ढाल लेती है। उसकी निष्ठा और आत्मीय सेवा के कारण महादेवी भी उसके ढंग को सहज भाव से स्वीकार करती हैं।

चरण 2: भोजन और दिनचर्या में देहातीपन भक्तिन की बनाई देहाती रसोई तथा सादा भोजन महादेवी के दैनिक जीवन का अंग बन जाते हैं। मोटी रोटी और ग्रामीण ढंग के भोजन के प्रति लेखिका का अपनापन बढ़ता है। भक्तिन केवल खाना बनाने वाली सेविका की तरह काम नहीं करती, बल्कि रसोई और घरेलू व्यवस्था में अपनी पसंद तथा समझ को भी महत्त्व देती है। इस प्रकार उसका प्रभाव लेखिका के स्वाद और जीवन-व्यवहार तक पहुँचता है।

चरण 3: कथन का भाव स्पष्ट करना लेखिका के अधिक देहाती हो जाने का अर्थ अशिक्षित हो जाना नहीं है। इसका अर्थ है कि वे भक्तिन की सादगी, ग्रामीण खानपान और घरेलू तौर-तरीकों को अपनाने लगीं। यहाँ भक्तिन के दृढ़ व्यक्तित्व और दोनों के आत्मीय संबंध का संकेत है। सामान्यतः नगर में आकर व्यक्ति बदलता है, पर भक्तिन अपने संस्कारों पर अडिग रहती है और अपनी संगति से महादेवी के जीवन में ग्रामीण रंग भर देती है।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन ने अपने ग्रामीण संस्कार और रहन-सहन बनाए रखे तथा महादेवी को अपनी देहाती रसोई, सादे भोजन और घरेलू तौर-तरीकों का अभ्यस्त बना दिया। भक्तिन स्वयं शहरी नहीं बनी, बल्कि उसके प्रभाव से लेखिका की दिनचर्या में ग्रामीण सादगी बढ़ गई; इसी अर्थ में महादेवी अधिक देहाती हो गईं।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर में भक्तिन के अटल ग्रामीण संस्कार, लेखिका के खानपान पर प्रभाव और दोनों की आत्मीयता को जोड़ें।

11(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'काले मेघा पानी दे' पाठ में जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी की मान्यता में लोकविश्वास, त्याग और सामूहिक कल्याण की भावना एक-दूसरे से जुड़े हैं।
- दान की सार्थकता उस वस्तु को देने में है जिसकी स्वयं को भी आवश्यकता हो; अभाव में दिया गया दान अधिक मूल्यवान होता है।

चरण 1: लेखक की आपत्ति और जीजी का तर्क लेखक को सूखे के समय इंदर सेना पर पानी फेंकना पानी की बरबादी लगता है। जीजी इसे केवल पानी बहाना नहीं, इंद्र को अर्घ्य देना मानती हैं। उनके अनुसार जब पानी का अकाल हो, तभी पानी देना सच्चा त्याग है। जिस वस्तु की अपने पास भरमार हो, उसे दे देना उतना कठिन नहीं होता जितना अपनी आवश्यकता की वस्तु का दान करना। इस प्रकार वे पानी की कमी को दान के विरोध में नहीं, उसके महत्त्व के पक्ष में तर्क बनाती हैं।

चरण 2: बीज के उदाहरण से पुष्टि जीजी समझाती हैं कि किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपने पास का कुछ अनाज खेत में बीज के रूप में डालता है। ऊपर से देखने पर लगता है कि वह अनाज मिट्टी में फेंक रहा है, किंतु उसी से आगे कई गुना अन्न मिलता है। इसी प्रकार इंदर सेना पर फेंका गया थोड़ा पानी उनके लोकविश्वास में वर्षा की प्राप्ति का बीज है। इंदर सेना बच्चों का निष्कपट दल है जो अपने लिए नहीं, पूरे गाँव के लिए पानी माँगता है। इसलिए उस पर पानी डालना सामूहिक भलाई के लिए किया गया त्याग है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंकने को इंद्र के प्रति अर्घ्य और अभाव में किया गया सार्थक दान बताकर सही ठहराया। बीज बोने के उदाहरण से उन्होंने समझाया कि थोड़ा देकर अधिक पाया जाता है और इस त्याग का लाभ पूरे समाज को मिलता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अभाव के समय दान, किसान के बीज का उदाहरण और पूरे गाँव के कल्याण की भावना अवश्य जोड़ें।

11(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

चार्ली सबसे ज्यादा स्वयं पर कब और क्यों हँसता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का हास्य मनुष्य की कमज़ोरियों और उसकी आत्ममुग्धता को उजागर करता है।
- आत्मपरिहास में व्यक्ति दूसरों के साथ-साथ अपनी दिखावटी महानता और अहंकार पर भी हँसता है।

चरण 1: स्वयं पर सबसे अधिक हँसने की स्थिति चार्ली स्वयं पर सबसे अधिक तब हँसता है जब वह अपने को घमंड और आत्मविश्वास से भरा हुआ, सफलता, सभ्यता, संस्कृति तथा समृद्धि की प्रतिमूर्ति दिखाता है। ऐसी स्थिति में वह स्वयं को दूसरों से अधिक शक्तिशाली और श्रेष्ठ समझता हुआ दिखाई देता है। कभी वह अत्यंत कठोर होने का, तो कभी अत्यंत कोमल और उदार होने का प्रभाव उत्पन्न करता

है। इन मुद्राओं में उसकी गरिमा बहुत बढ़ी हुई लगती है, लेकिन यह गरिमा स्थायी नहीं रहती।

चरण 2: हँसी का कारण और उसका मानवीय अर्थ ऐसी आत्ममुग्ध मुद्रा के तुरंत बाद कोई घटना उसकी सारी शान और श्रेष्ठता को ध्वस्त कर देती है। उसका बड़प्पन वैसे ही समाप्त हो जाता है जैसे सुई चुभते ही गुब्बारे की हवा निकल जाती है। यहीं उसका आत्मपरिहास तीखा हो उठता है। वह दिखाता है कि मनुष्य चाहे अपने को कितना भी बड़ा समझे, उसकी साधारण मानवीय दुर्बलताएँ बनी रहती हैं। दर्शक चार्ली में अपना ही अहंकार और अपनी ही असहायता पहचानते हैं। इसीलिए उसकी हँसी केवल किसी और का उपहास नहीं रहती; वह हमें स्वयं पर हँसना भी सिखाती है।

चरण 3: निष्कर्ष चार्ली सबसे अधिक अपने गर्व, श्रेष्ठता और दिखावटी महानता की मुद्रा पर हँसता है, क्योंकि परिस्थिति का छोटा-सा उलटफेर उसकी सारी गरिमा समाप्त कर देता है। इस आत्मपरिहास से वह मनुष्य के अहंकार की वास्तविकता प्रकट करता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों हिस्से स्पष्ट करें: कब में अहंकारपूर्ण मुद्रा और क्यों में उस गरिमा का अचानक टूटना लिखें।

11(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'नमक' कहानी में भारत और पाक की जनता के आरोपित भेदभावों के बीच मोहब्बत का नमकीन स्वाद घुला हुआ है — कैसे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नमक कहानी राजनीतिक सीमाओं से ऊपर उठकर साझा स्मृतियों और मानवीय आत्मीयता को व्यक्त करती है।
- नमक अपने वतन की मिट्टी, स्वाद और उससे जुड़े भावनात्मक संबंधों का प्रतीक बन जाता है।

चरण 1: सिख बीबी और सफ़िया की आत्मीयता विभाजन ने भारत और पाकिस्तान के बीच सरहद खड़ी कर दी, किंतु लोगों के मन में बसे अपने पुराने घर और शहर मिट नहीं गए। सिख बीबी भारत में रहते हुए भी लाहौर को अपना वतन मानती हैं और वहाँ का नमक मँगवाती हैं। उनका अनुरोध किसी महँगी वस्तु के लिए नहीं, उस स्वाद के लिए है जिसमें उनके पुराने जीवन की यादें बसी हैं। सफ़िया उनकी भावना समझती है और नमक लाने की ज़िम्मेदारी अपनत्व के साथ निभाती है। धर्म और राष्ट्रीयता की भिन्नता उनके स्नेह में बाधा नहीं बनती।

चरण 2: सरहद के अधिकारियों का मानवीय व्यवहार नमक को लेकर सीमा के नियम बाधा उत्पन्न करते हैं, फिर भी भावनाओं को समझने पर कस्टम अधिकारी सहानुभूति दिखाते हैं। पाकिस्तान के अधिकारी की स्मृतियों में दिल्ली अपना वतन है; भारत की ओर अधिकारी ढाका से अपने लगाव को नहीं भूल पाया है। उनके अनुभव बताते हैं कि राजनीतिक बँटवारे से किसी स्थान के प्रति व्यक्ति का प्रेम समाप्त नहीं होता। नमक की पुड़िया इस साझा दर्द और अपनत्व को एक-दूसरे तक पहुँचाती है। दोनों ओर के लोगों में विस्थापन की पीड़ा और अपने वतन की याद समान हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी में आरोपित राजनीतिक और धार्मिक भेदों के बावजूद सिख बीबी, सफ़िया और सीमा अधिकारियों की आत्मीयता बनी रहती है। लाहौर का नमक साझा संस्कृति, स्मृति और मोहब्बत का स्वाद बनकर दोनों देशों के लोगों को जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: केवल भाईचारे का सामान्य कथन न लिखें; सिख बीबी का लाहौर-प्रेम, सफ़िया का प्रयास और अधिकारियों की वतन-स्मृति जोड़ें।

11(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

द्विवेदी जी ने 'शिरीष के फूल' पाठ में "शिरीष के माध्यम से कोलाहल और संघर्ष से भरे जीवन में अविचल रहकर ज़िन्दा रहने की सीख दी है" । इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिरीष प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवन की सरसता, कोमलता और उत्साह बचाए रखने का प्रतीक है।
- अविचल रहने का अर्थ जड़ होना नहीं, संकटों के बीच भी सक्रिय और प्रसन्न रहकर जीवन का सामना करना है।

चरण 1: भीषण गर्मी में खिलते रहने का उदाहरण जब तेज़ धूप, लू और गर्मी से आसपास की प्रकृति व्याकुल हो उठती है, तब भी शिरीष फूलता रहता है। उसके कोमल फूल प्रतिकूल मौसम के सामने जीवन की हार स्वीकार नहीं करते। वह बाहर की कठोरता को अपने भीतर की सरसता पर हावी नहीं होने देता। इससे मनुष्य को शिक्षा मिलती है कि कठिनाइयों और संघर्षों के बीच भी अपने मन का संतुलन, उल्लास और सृजनशीलता बनाए रखनी चाहिए। दुख के दबाव में जीवन से मुँह मोड़ लेना उचित नहीं है।

चरण 2: अनासक्त जीवन और गांधी जी का उदाहरण द्विवेदी जी को शिरीष एक ऐसे अवधूत की तरह दिखाई देता है जो परिस्थितियों से घबराए बिना अपनी मस्ती में जीता है। उसकी अनासक्ति निष्क्रियता नहीं, विपरीत दशाओं में भी जीवन का रस ग्रहण करने की क्षमता है। लेखक गांधी जी को भी इसी भाव से याद करते हैं। देश में हिंसा और सांप्रदायिक द्वेष के बीच गांधी जी ने प्रेम, अहिंसा और मानवता का मार्ग नहीं छोड़ा। जैसे शिरीष तपती धरती पर कोमल फूल देता है, वैसे ही गांधी जी अशांति के बीच करुणा और शांति का संदेश देते रहे।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष की भीषण गर्मी में भी खिलते रहने की प्रवृत्ति और गांधी जी की संकट में अडिग मानवीय निष्ठा इस कथन की पुष्टि करती हैं। जीवन के कोलाहल से टूटने के बजाय मनुष्य को अपनी कोमलता, प्रसन्नता और कर्मशीलता बचाए रखनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: शिरीष के प्राकृतिक व्यवहार और गांधी जी के मानवीय आचरण का संबंध दिखाएँ; अविचलता को निष्क्रियता न बताएँ।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

क्या पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है ? तर्क-सहित उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी की केंद्रीय संवेदना बदलते जीवन-मूल्यों से उपजा पीढ़ियों का अंतर और परिवार के भीतर बढ़ती मानसिक दूरी है।
- पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इस टकराव की एक अभिव्यक्ति है; पूरी कहानी का अर्थ केवल विदेशी रीति अपनाने तक सीमित नहीं है।

चरण 1: पाश्चात्य प्रभाव की उपस्थिति यशोधर बाबू की शादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ को उनके बच्चे सिल्वर वैडिंग के रूप में मनाते हैं। घर में पार्टी का आयोजन और नई जीवन-शैली के प्रति उत्साह पाश्चात्य प्रभाव की ओर संकेत करते हैं। यशोधर बाबू इन तौर-तरीकों में सहज नहीं हो पाते। इसलिए पाश्चात्य प्रभाव कहानी में उपस्थित अवश्य है और पुराने तथा नए मूल्यों के टकराव को उभारने में उसकी भूमिका भी है। किंतु केवल इसी आधार पर उसे कहानी की संपूर्ण मूल संवेदना कहना पर्याप्त नहीं होगा।

चरण 2: कहानी की अधिक व्यापक संवेदना यशोधर बाबू किशनदा से मिले सादगी, अनुशासन और आत्मीय सामाजिक संबंधों के संस्कारों से बँधे हैं। उनकी संतान आधुनिक सुविधाओं और नई सामाजिक प्रतिष्ठा को अधिक महत्त्व देती है। पत्नी भी बच्चों की जीवन-शैली के साथ अपेक्षाकृत आसानी से ढल जाती है, जिससे यशोधर बाबू अपने परिवार में अकेलापन अनुभव करते हैं। बेटे का ड्रेसिंग गाउन देना प्रेम का संकेत है, पर उस अवसर पर भी पिता को आत्मीय संवाद की कमी अखरती है। समस्या केवल पहनावे या उत्सव की पद्धति की नहीं, आपसी समझ और भावनात्मक निकटता की है।

चरण 3: निष्कर्ष पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को कहानी का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष कहा जा सकता है, किंतु इसकी मूल संवेदना पीढ़ियों के बदलते मूल्यों, संवाद की कमी और यशोधर बाबू के अकेलेपन में निहित है। पश्चिमी तौर-तरीके इस गहरे पारिवारिक तनाव को व्यक्त

करने का माध्यम हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पाश्चात्य प्रभाव के उदाहरण के बाद पीढ़ियों के अंतर और पिता के अकेलेपन को अलग से स्पष्ट करें।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

श्री सौंदलगेकर के अध्यापन की उन विशेषताओं का उल्लेख करें जिन्होंने कविताओं के प्रति 'जूझ' पाठ के लेखक के मन में रुचि जगाई ।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता के प्रभावी अध्यापन में अर्थ बताने के साथ लय, भाव और कल्पना का अनुभव कराना आवश्यक है।
- आनंद यादव के जीवन में सौंदलगेकर मास्टर की प्रेरणा ने कविता सुनने की रुचि को कविता रचने के आत्मविश्वास में बदला।

चरण 1: सस्वर पाठ और भावपूर्ण प्रस्तुति सौंदलगेकर मास्टर कविता को केवल पढ़ाते नहीं थे, बल्कि उसे सुर, लय और ताल के साथ गाते थे। उनके भावपूर्ण वाचन तथा अभिनय से कविता का भाव विद्यार्थियों के सामने सजीव हो उठता था। लेखक उनके गाने के ढंग और हाव-भाव को ध्यान से देखता और बाद में खेतों में काम करते समय उसी प्रकार कविताएँ गुनगुनाता था। इस प्रकार कक्षा का काव्यानुभव उसके दैनिक जीवन तक फैल गया।

चरण 2: व्यापक काव्यज्ञान और सृजन का प्रोत्साहन मास्टर को अनेक कविताएँ याद थीं। वे पढ़ाई जा रही कविता से मिलती-जुलती अन्य कविताएँ तथा अपनी रचनाएँ भी सुनाते और कवियों के प्रसंग बताते थे। उनके माध्यम से लेखक ने जाना कि कवि भी सामान्य मनुष्यों जैसे होते हैं और अपने आसपास के अनुभवों पर कविता लिख सकते हैं। वे लेखक की बनाई कविताएँ सुनते, उनका उत्साह बढ़ाते और रचना में सुधार का मार्ग दिखाते थे। इससे लेखक को अपने अनुभव कविता में व्यक्त करने की प्रेरणा मिली।

चरण 3: निष्कर्ष सौंदलगेकर के संगीतपूर्ण वाचन, भावाभिनय, समृद्ध काव्यज्ञान और व्यक्तिगत प्रोत्साहन ने लेखक के मन में कविता के प्रति प्रेम जगाया तथा उसकी रचनात्मक प्रतिभा को विकसित किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अध्यापन की विशेषताओं को लेखक पर उनके प्रभाव से जोड़ें: सस्वर पाठ से रसबोध और प्रोत्साहन से काव्यरचना।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पुरातत्त्व के कौन-से चिह्न ऐसे हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि "सिंधु सभ्यता ताक़त से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी ?"

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी प्राचीन सभ्यता की सामाजिक व्यवस्था का अनुमान उसके भवनों, नगर-नियोजन, कलाकृतियों और उपकरणों से लगाया जाता है।
- पाठ में सिंधु सभ्यता की पहचान सत्ता के दिखावे की अपेक्षा नागरिक सुविधाओं, व्यवस्था और कलात्मक समझ से बनती है।

चरण 1: शक्ति के प्रदर्शन का अभाव मोहनजोदड़ो के अवशेषों में विशाल राजप्रासादों, भव्य मंदिरों और राजाओं की विराट मूर्तियों का वैसा प्रभुत्व नहीं दिखाई देता जैसा अनेक दूसरी प्राचीन सभ्यताओं में मिलता है। प्राप्त औजारों के बीच हथियारों का भी प्रमुख स्थान नहीं है। इसलिए यहाँ के पुरातात्त्विक चिह्न किसी सर्वशक्तिमान राजा, युद्ध अथवा धार्मिक सत्ता के आतंक को नगर-जीवन का केंद्र नहीं बनाते। यह बात बल-प्रदर्शन की अपेक्षा सामुदायिक जीवन के महत्त्व का संकेत देती है।

चरण 2: नगर-व्यवस्था और नागरिक समझ के प्रमाण सुनियोजित सड़कें, सुव्यवस्थित नालियाँ, कुएँ, स्नानागार और मकानों की बनावट सार्वजनिक सुविधा तथा स्वच्छता के प्रति सजगता दिखाती है। इन व्यवस्थाओं से लोगों के परस्पर सहयोग और साझा नियमों का बोध

होता है। छोटी किंतु सुघड़ मूर्तियाँ, मुहरें और उपयोगी वस्तुएँ भी दिखावे के स्थान पर कौशल, सौंदर्यबोध और जीवन की व्यावहारिक आवश्यकताओं को महत्त्व देने वाली संस्कृति का परिचय देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शस्त्र और राजवैभव की प्रधानता का अभाव तथा उन्नत नगर-नियोजन, सफाई और कलात्मक शिल्प के प्रमाण इस निष्कर्ष को पुष्ट करते हैं कि सिंधु सभ्यता ताक़त से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित थी।

त्वरित सुझाव: दोनों प्रकार के प्रमाण दें: सत्ता के दिखावे का अभाव और नागरिक सुविधाओं की उपस्थिति; केवल नालियों का वर्णन पर्याप्त नहीं है।

12(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर बताइए कि ऐन की डायरी उसके सुख-दुख का भावनात्मक दस्तावेज़ भी है । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी में व्यक्ति अपने अनुभवों के साथ उन अनुभवों से उत्पन्न निजी भावनाएँ भी दर्ज करता है।
- ऐन की डायरी में युद्ध और यहूदी उत्पीड़न के बीच एक किशोरी का अकेलापन, स्नेह की आकांक्षा, भय और आशा प्रकट होते हैं।

चरण 1: दुख, भय और अकेलेपन की अभिव्यक्ति ऐन को यहूदी होने के कारण अपने परिवार के साथ छिपकर रहना पड़ता है। बाहर निकलने की स्वतंत्रता का अभाव, पकड़े जाने का डर, युद्ध की अनिश्चितता और आसपास के लोगों से तनाव उसके मन पर बोझ डालते हैं। अपनी बात पूरी तरह समझने वाला आत्मीय साथी न मिलने से वह अकेलापन अनुभव करती है। वह डायरी को किट्टी नाम देकर मित्र की तरह उससे मन की बातें कहती है। इसलिए उसके लेखन में घटनाओं के साथ उनका निजी भावनात्मक प्रभाव भी सुरक्षित है।

चरण 2: सुख, आत्मीयता और भविष्य की आशा डायरी में केवल पीड़ा नहीं है। पीटर के प्रति उसका लगाव, किसी के द्वारा समझे जाने का सुख, प्रकृति और खुले आकाश के प्रति आकर्षण तथा स्वतंत्र भविष्य के सपने भी दिखाई देते हैं। वह पढ़ना-लिखना चाहती है और लेखिका बनने की आकांक्षा रखती है। कठिन परिस्थितियों के बीच मिलने वाली छोटी खुशियाँ तथा जीवन के प्रति बना हुआ विश्वास उसके संवेदनशील किशोर मन को सामने लाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार ऐन की डायरी बाहरी घटनाओं का विवरण होने के साथ उसके भय, अकेलेपन, प्रेम, प्रसन्नता और आशाओं का आत्मीय लेखा है। इसी कारण वह उसके सुख-दुख का भावनात्मक दस्तावेज़ भी है।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में इतिहास से अधिक ऐन की भावनाओं पर ध्यान दें; दुख के साथ स्नेह, छोटी खुशियों और भविष्य की आशा का उदाहरण भी दें।

13(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'ऐन की डायरी' एक ऐतिहासिक दौर का जीवन्त दस्तावेज़ है — इस पर अपने विचार प्रकट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐतिहासिक दस्तावेज़ किसी काल की घटनाओं और उनके मानवीय प्रभावों का प्रमाण प्रस्तुत करता है।
- ऐन की डायरी द्वितीय विश्वयुद्ध और नाजी उत्पीड़न को एक यहूदी किशोरी के प्रत्यक्ष जीवनानुभव से सामने लाती है।

चरण 1: ऐतिहासिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष चित्र ऐन की डायरी उस समय का चित्र प्रस्तुत करती है जब नाजी शासन यहूदियों को अधिकारों से वंचित कर रहा था और उन्हें पकड़कर यातना शिविरों में भेजा जा रहा था। ऐन तथा उसके परिवार को गिरफ्तारी से बचने के लिए गुप्त स्थान में शरण लेनी पड़ी। युद्ध, हवाई हमलों, भोजन की कठिनाइयों और पकड़े जाने की आशंका का उल्लेख उस दौर के असुरक्षित जीवन को सामने लाता है। दिनांकित प्रविष्टियाँ इन परिस्थितियों को किसी बाद के सामान्य विवरण की अपेक्षा तत्काल अनुभव

के रूप में सुरक्षित करती हैं।

चरण 2: इतिहास के भीतर सामान्य मनुष्य का जीवन डायरी बताती है कि बड़ी राजनीतिक घटनाएँ एक किशोरी की पढ़ाई, स्वतंत्रता, पारिवारिक संबंधों और भविष्य के सपनों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। छिपे हुए लोगों की दिनचर्या, सीमित साधन, आपसी तनाव और बाहर की खबरों पर उनकी प्रतिक्रियाएँ युद्ध के मानवीय पक्ष को उजागर करती हैं। सहायता करने वाले लोगों का सहयोग तथा ऐन की जीने और लिखने की आकांक्षा संकट के बीच मानवीय संवेदना और आशा को भी प्रकट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष अत: ऐन की डायरी द्वितीय विश्वयुद्ध के दौर में यहूदियों के उत्पीड़न और साधारण लोगों की त्रासदी का जीवन्त दस्तावेज़ है। इसमें इतिहास केवल घटनाओं के रूप में नहीं, बल्कि उन घटनाओं को जीते हुए मनुष्य की आवाज़ के रूप में उपस्थित है।

त्वरित सुझाव: ऐतिहासिक महत्त्व बताते समय युद्ध और यहूदी उत्पीड़न को छिपकर रहने की दिनचर्या तथा ऐन की व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर पड़े प्रभाव से जोड़ें।

13(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

'जूझ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी लिखिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी रचना का सार्थक शीर्षक उसके प्रमुख कथ्य, केंद्रीय संघर्ष और पात्र के जीवनानुभव को अभिव्यक्त करता है।
- जूझ का अर्थ कठिन परिस्थितियों से संघर्ष करना है; आनंद यादव की कथा का केंद्र शिक्षा पाने और अपनी प्रतिभा विकसित करने का संघर्ष है।

चरण 1: पढ़ाई के लिए बाहरी परिस्थितियों से संघर्ष लेखक की तीव्र इच्छा पढ़ने की है, किंतु उसके पिता उसे विद्यालय भेजने के स्थान पर खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। पढ़ाई छूटने से लेखक दुखी होता है और फिर विद्यालय जाने का रास्ता खोजता है। दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से अनुमति मिलने पर भी उसे खेत का काम करने की शर्त निभानी पड़ती है। वह श्रम, पारिवारिक दबाव और समय की कमी के बीच अपनी शिक्षा जारी रखता है। इसलिए पढ़ाई उसके लिए सहज सुविधा नहीं, निरंतर प्रयत्न से प्राप्त अवसर है।

चरण 2: आत्मविकास के लिए भीतरी संघर्ष विद्यालय लौटने के बाद लेखक को अपनी झिझक और पिछड़ जाने की स्थिति से भी लड़ना पड़ता है। वह परिश्रम से पढ़ाई में आगे बढ़ता है और शिक्षकों तथा साथियों से प्रेरणा ग्रहण करता है। सौंदलगेकर मास्टर के प्रभाव से उसमें कविता के प्रति रुचि जागती है। खेतों में काम करते हुए कविताएँ गुनगुनाना और स्वयं रचना का अभ्यास करना बताता है कि वह कठिन जीवन के बीच भी अपनी संवेदना और सृजनशीलता को विकसित करता रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष जूझ शीर्षक पूर्णत: सार्थक है, क्योंकि पूरी कथा लेखक के शिक्षा और आत्मनिर्माण के लिए किए गए संघर्ष को व्यक्त करती है। उसकी लगन, श्रम और जिजीविषा ही कथा की मुख्य शक्ति हैं, जिन्हें यह संक्षिप्त शीर्षक प्रभावी रूप में समेटता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक की सार्थकता में पहले उसका अर्थ लिखें, फिर खेत और विद्यालय के संघर्ष तथा कविता से हुए आत्मविकास के उदाहरण जोड़ें।

13(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए :

क्या 'पीढ़ी के अन्तराल' को 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है ? तर्क-सहित उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पीढ़ियों का अंतर केवल आयु का अंतर नहीं, बल्कि बदलते समय में जीवन-मूल्यों, व्यवहार और आकांक्षाओं का अंतर है।

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी में यशोधर बाबू की परंपरानिष्ठ दृष्टि और उनके परिवार की आधुनिक जीवन-शैली के टकराव से कथ्य विकसित होता है।

चरण 1: दोनों पीढ़ियों की दृष्टि पहचानिए यशोधर बाबू सादगी, मर्यादा और पुराने संबंधों को महत्त्व देते हैं। किशनदा का व्यक्तित्व और उनकी सीख उनके जीवन के मानदंड हैं। इसके विपरीत उनके बच्चे आर्थिक सफलता, नए रहन-सहन और आधुनिक सामाजिक व्यवहार को महत्त्व देते हैं। पत्नी भी बदलते समय और बच्चों की पसंद के साथ चलने लगती हैं। इसलिए यशोधर बाबू अपने ही घर में अपने विचारों को असंगत और स्वयं को अकेला पाते हैं।

चरण 2: उत्सव के प्रसंग से अंतर स्पष्ट कीजिए विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर बच्चों द्वारा आयोजित सिल्वर वैडिंग का समारोह नई पीढ़ी के उत्साह और आधुनिक जीवन-शैली का परिचायक है, लेकिन यशोधर बाबू उसकी रीति और प्रदर्शन से सहज नहीं हो पाते। बेटे का दिया हुआ गाउन भी इस दूरी को उभारता है। बेटे की व्यावहारिक चिंता है कि वे सुबह दूध लेने जाते समय गाउन पहन सकें; पिता के मन में अपेक्षा है कि बेटा स्वयं दूध लाने का दायित्व सँभाले। एक ही उपहार में दोनों पीढ़ियाँ संबंध और देखभाल के अलग-अलग अर्थ देखती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः पीढ़ियों के अंतराल को कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है। कहानी केवल पुरानी और नई आदतों का अंतर नहीं दिखाती, बल्कि उस अंतर से उपजे संवाद के अभाव, भावनात्मक दूरी और वृद्ध होते व्यक्ति के अकेलेपन को भी व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में यशोधर बाबू की पुरानी जीवन-दृष्टि के सामने बच्चों की आधुनिकता रखिए और गाउन वाले प्रसंग से भावनात्मक दूरी सिद्ध कीजिए।

14. 'सिल्वर वैडिंग' के कथानायक यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है — इस कथन के पक्ष या विपक्ष में तर्क दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते समय उसके अनुकरणीय गुणों और उसकी सीमाओं, दोनों को कहानी के प्रसंगों से परखना चाहिए।
- नई पीढ़ी के लिए पुरानी पीढ़ी के मानवीय मूल्यों को अपनाना उपयोगी है, लेकिन समय के अनुसार व्यवहार में परिवर्तन भी आवश्यक है।

चरण 1: कथन के विपक्ष में अपना आधार रखिए मैं इस कथन के विपक्ष में हूँ कि यशोधर बाबू पूर्ण आदर्श व्यक्तित्व हैं और नई पीढ़ी को उनके समस्त विचारों को ही अपनाना चाहिए। वे अनेक अच्छे गुणों वाले व्यक्ति अवश्य हैं, पर कहानी उन्हें सीमाओं से रहित आदर्श के रूप में प्रस्तुत नहीं करती। उनका व्यक्तित्व परंपरा और आधुनिकता के बीच उलझे हुए उस व्यक्ति का है जो बदलते परिवेश में अपने लिए स्थान खोज रहा है। अतः उनके हर विचार को अंतिम मानना उचित नहीं होगा।

चरण 2: अनुकरणीय गुणों को स्वीकार कीजिए यशोधर बाबू की सादगी, आत्मसंयम और संबंधों के प्रति लगाव प्रशंसनीय हैं। वे केवल धन, दिखावे और सुविधाओं से जीवन का मूल्य नहीं आँकते। किशनदा के प्रति उनकी कृतज्ञता तथा पारिवारिक आत्मीयता की उनकी अपेक्षा मानवीय संवेदनशीलता दर्शाती है। गाउन के प्रसंग में उनकी इच्छा केवल सुंदर उपहार पाने की नहीं, बल्कि बेटे से वास्तविक सहयोग और अपनापन पाने की है। नई पीढ़ी को उनके इन मूल्यों से सीखना चाहिए, क्योंकि वस्तुएँ और उत्सव दैनिक देखभाल का पूरा विकल्प नहीं बन सकते।

चरण 3: उनके दृष्टिकोण की सीमाएँ स्पष्ट कीजिए फिर भी वे किशनदा और अपने पुराने अनुभवों को बहुत अधिक निर्णायक मानते हैं। बच्चों की नई जीवन-शैली और आकांक्षाओं को स्वीकार करने में उनकी झिझक परिवार की दूरी बढ़ाती है। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मनाने में बच्चों का उत्साह है, पर वे उसमें सहज भागीदारी नहीं कर पाते। हर नया व्यवहार केवल दिखावा नहीं होता; वह स्नेह व्यक्त करने का बदला हुआ तरीका भी हो सकता है। यदि वे अपने अनुभव साझा करते हुए बच्चों की बात सुनें और अपनी भावनात्मक अपेक्षाएँ स्पष्ट

करें, तो परस्पर समझ बढ़ सकती है। इसलिए समस्या का समाधान किसी एक पीढ़ी के सभी विचारों को दूसरी पर लागू करना नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष यशोधर बाबू सम्मान और सहानुभूति के पात्र हैं, किंतु उनके विचारों का अंधानुकरण उचित नहीं है। नई पीढ़ी को उनकी सादगी और आत्मीयता अपनानी चाहिए तथा यशोधर बाबू जैसे बुजुर्गों को नई परिस्थितियों के प्रति लचीला होना चाहिए। परस्पर सम्मान, सहयोग और संवाद ही कहानी के तनाव का उचित समाधान हैं।

त्वरित सुझाव: विपक्ष चुनने पर भी यशोधर बाबू के अच्छे गुण स्वीकार कीजिए; फिर गाउन और वर्षगाँठ के प्रसंगों से सिद्ध कीजिए कि सम्मान करना और सभी विचार अपनाना अलग बातें हैं।

अथवा

14. नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी-व्यवस्था के आधार पर लेखक सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल संस्कृति' कहना चाहता है । लेखक के इस विचार के पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क दीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी सभ्यता को जल-संस्कृति कहने का आधार केवल जल की उपलब्धता नहीं, बल्कि उसके संचय, उपयोग, स्वच्छता और निकास की व्यवस्थित सार्वजनिक व्यवस्था भी है।
- ओम थानवी के पाठ में मोहनजोदड़ो के अवशेष सिंधु घाटी सभ्यता की विकसित नगर-योजना और नागरिक जीवन का परिचय देते हैं।

चरण 1: नदी और कुओं के आधार पर पक्ष रखिए मैं लेखक के विचार के पक्ष में हूँ। सिंधु नदी इस सभ्यता के विकास का महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक आधार थी। नदी की उपस्थिति ने बस्तियों, खेती और जनजीवन को सहारा दिया। लेकिन नगरवासियों ने केवल नदी पर निर्भर रहने के बजाय कुओं के माध्यम से जल को बस्ती के भीतर सुलभ बनाया। मोहनजोदड़ो में अनेक कुओं का होना बताता है कि पानी की दैनिक आवश्यकता को नगर-योजना में विशेष महत्त्व मिला था। जल प्राप्त करने के साधन नागरिक जीवन से व्यवस्थित रूप से जुड़े हुए थे।

चरण 2: स्नानागार से सामुदायिक जीवन का प्रमाण दीजिए विशाल स्नानागार इस सभ्यता की जल-संबंधी दक्षता का प्रमुख प्रमाण है। पकी ईंटों से बने कुंड, उसमें उतरने की सीढ़ियाँ तथा पानी को सुरक्षित रखने और निकालने की व्यवस्था सोच-समझकर किए गए निर्माण को दिखाती हैं। स्नानागार का सार्वजनिक स्वरूप बताता है कि जल का उपयोग केवल पीने और खेती तक सीमित नहीं था; स्नान और सामुदायिक जीवन में भी उसका विशेष स्थान था। घरों में स्नान की व्यवस्था होना स्वच्छता के प्रति सजगता को और स्पष्ट करता है। इस प्रकार जल निजी तथा सार्वजनिक, दोनों क्षेत्रों में जीवन का केंद्रीय अंग था।

चरण 3: निकासी-व्यवस्था का महत्त्व समझाइए घरों से गंदा पानी निकालने वाली नालियों का सड़कों की बड़ी नालियों से जुड़ना सुविचारित नगर-व्यवस्था का प्रमाण है। ढकी हुई नालियाँ और उनके रखरखाव की सुविधा यह दिखाती हैं कि पानी पहुँचाने के साथ इस्तेमाल किए गए पानी को हटाना भी आवश्यक माना गया था। ऐसी निकासी से बस्ती में गंदगी और जल-जमाव को नियंत्रित किया जा सकता था। यह व्यवस्था किसी एक संपन्न व्यक्ति की सुविधा भर नहीं, बल्कि पूरे नगर के सुव्यवस्थित जीवन की चिंता व्यक्त करती है। नदी, कुएँ, स्नानागार और नालियाँ मिलकर जल-उपयोग की एक समन्वित व्यवस्था का परिचय देते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष इसलिए सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कहना सार्थक है। उसके नगरों में जल की उपलब्धता, दैनिक उपयोग, स्नान और स्वच्छ निकास को योजनाबद्ध महत्त्व दिया गया था। ये अवशेष जल के प्रति तकनीकी समझ, स्वच्छता-बोध और विकसित नागरिक चेतना के प्रमाण हैं।

त्वरित सुझाव: तर्कों को नदी से जल-आधार, कुओं से सुलभ आपूर्ति, स्नानागार से सामुदायिक उपयोग और नालियों से स्वच्छ निकास के क्रम में जोड़िए।